



BAU

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड
(www.bauranchi.org/www.bau-eagriculture.com)
मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- दुमका
(amfudumka@gmail.com)



IMD

Ref:.. 55/AAS/Dumka, Jharkhand

Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग गँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनों का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

Table with 6 columns: मौसम इकाई, 14 नवम्बर, 15 नवम्बर, 16 नवम्बर, 17 नवम्बर, 18 नवम्बर. Rows include: वर्षापात (मिलीमीटर), अधिकतम तापमान (°C), न्यूनतम तापमान (°C), आकाश में बादल की स्थिति, अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%), न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%), हवा की गति (कि.मी/ घंटा), हवा की दिशा.

फसल की अवस्था:-

Table with 4 columns: फसल, अवस्था, फसल, अवस्था. Rows include: धान, चना, गन्ना, मूँगफली, मूँग, प्याज, सब्जी मटर, पपीता.

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एवं तापमान में कमी की सम्भावना है। किसान भाई खेत की जोटाई एवं रबी फसल की बोआई करें। रबी फसल के लिए अनाज प्रभेदों का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलों के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करें। किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैंगन ,पत्तागोभी एवं मूँगफली, गन्ना, आलू और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया ,तीली,मसूर एवं चना की खेती करें।

धान परिपक्व की अवस्था में है, अतः धान की कटनी करें , यदि बालियों में आमरी कन्ड रोम है तो प्रभावित बालियों को निकाल कर जल दें। खालिहान में धान झाड़कर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारों की दरारों को बन्द कर दें साथ ही साथ मालाथियान 50 ई मी का एक भाग को 300 भाग पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पुरानी बोरियों का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उवाले। भंडार गृह एवं बोरियों के अच्छी तरह मुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पट्टा या पोलिथिन की चादर बिछाकर बोरियों को दीवारों एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखें।

गेहूँ बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करें -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद - एच .यू. डब्ल्यू.-468 ,डी.बी. डब्ल्यू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच .डी-2967, एच .डी-2733 की बुआई करें। 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद -बी-306, के-8027 , के-8962 ,एच .डी-2643 की बुआई करें। बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैक्सीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपिर्फॉस 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेंटीमीटर रखकर 100 किन्टल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर बुआई करें।

अरहर फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड या थाबेनोलाइड कोटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोकोटोफॉस ताल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।

बजरी एवं कुली मुआ पिल्ले से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुओं को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाइलपराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से मुरकाव करें तथा छोटे पिल्ले के निचंवरण हेतु किनालाफॉस 25 ई. मी 1.5 लीटर प्रति 500 लीटर पानी के दर में छिड़काव करें और वयस्क पिल्लुओं का नियंत्रण हेतु ट्राइजोफॉस या डाइक्लोथॉस 1 लीटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था में छिड़काव करें। पीला शिरा रोग से निचंवरण हेतु रंगी पौधों को सावधानी से उखाड़कर मिट्टी में दबा दें और सफेद मकड़ी के निचंवरण हेतु मेटासिटॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्वोर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

राई एवं पीला सरसों राई के उन्नत प्रभेद-शिवानी, पूसा बोल्ड, एन .आर . सी . एच .बी 101, पूसा मस्टर्ड और पीला सरसों के उन्नत प्रभेद- एच .आर . सी .वार्ड . एम 05-02 की बुआई एकल फसल के रूप में करें। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें।

चना एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काजुली वीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (दोरी वीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि में से किसी एक की बुआई करें या तीली-सरसों के साथ अनाज फसल के रूप में लगायें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थीरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात गैडोथियोस क्लरवर या पी . एस . बी 200 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर बुआई करें।

मसूर मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी .एल -77,एच के . एल . एस . -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें। कतार से कतार 25 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंटीमीटर रखकर छोटे दानों के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बड़े दानों के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थीरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।

तीली उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 307, (आसिंचित अवस्था में) प्रेक्चर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में) , बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर बुआई करें। रोग प्रत खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीली की खेती न करें।

टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी 1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, पूसा हाइब्रिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आधा,बी.टी -2। 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , पाइड ऑफ इंडिया और अर्ली इम्पेड। 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुरा दीपावली , कुआरी , अर्ली मिथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का विचडि नेट शेड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें। बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राइकोगैमा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉस्फेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंटीमीटर रखकर 8 से 10 दिनों के पौधा की रोपाई करें।

सब्जी मटर उन्नत प्रभेद -आर्केल , काशी नन्दिनी , पी .एम-113 , पूसा प्रगति एवं अनाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंधित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचारित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रख कर बुआई करें।

आलू उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुत्रगज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुत्रक एवं कुफरी लालिम (मधयम),कुफरी सिन्डुरी एवं कुफरी चिपखोल-1 (पिछात) , इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुआई के लिए चयन करें। बुआई के लिए 25 से 30किन्टल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुआई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम या मेनकोजेव या रेडोमिल एम .जेड .1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें। खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नवजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम मल्फरप्रति हेक्टेयर के दर से बुआई के समय डालें। नवजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई खुले कतार में डालें। फसल की पतियाँ टेढ़ी मेढ़ी होने पर कालडेन 50 एम पी अतः बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तर्गत पर छिड़काव करें। 25 से 30 दिनों के फसल की निर्याद -गुड्राई कर 162 किलोग्राम यूरिया की बची मात्रा का मुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें।

प्याज उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एच 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पूसा वाईट ,पूसा माधवी, वयवई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलाग्री रेड की विचडि उगायें। विचडि उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा सिगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद विजस्थली में तापमान बनाये रखने हेतु जन्द अंकुरण होने तक पुआल में ढकें।

पपीता रिंग स्पट वायरस तथा मैजिक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किसें पूसा डेवार्क या इन्डिव्यू की रोपाई करें , रोपाई के लिए पौधों से पौधों के बीच की दूरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) >60 (बीड़ाई) >60 सेंटीमीटर (नहर) गड्ढा खोंदें। गड्ढा में खाद की मात्रा - सड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करज व नीम खाली 1 किलोग्राम,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाइलपराथियोन धुल 50 ग्राम खादें हुए मिट्टी में मिलाकर भर दें तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें।

गोजालि इस मौसम में गोजालि पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अतः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ .एम .डी . का टीकाकरण करा दें। दुग्ध की उत्पादन में बढ़ाव हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट.यू.पी. ओ-812,एच ओ. एम-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंधित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमीटर में डालकर बुआई करें।



BAU

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड
(www.bauranchi.org/www.bau-agriculture.com)



IMD

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- देवघर
(amfudumka@gmail.com)

Ref:.. 55/AAS/Dumka, Jharkhand

Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग गँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनों का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

Table with 6 columns: मौसम इकाई, 14 नवम्बर, 15 नवम्बर, 16 नवम्बर, 17 नवम्बर, 18 नवम्बर. Rows include: वर्षापात (मिलीमीटर), अधिकतम तापमान (°C), न्यूनतम तापमान (°C), आकाश में बादल की स्थिति, अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%), न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%), हवा की गति (कि.मी/ घंटा), हवा की दिशा.

फसल की अवस्था:-

Table with 4 columns: फसल, अवस्था, फसल, अवस्था. Rows include: धान, चना, राई, पीला सरसों और मटर, तिल,उरद एवं मूँगफली, टमाटर, बैंगन,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी, सरपौआ, पापैता.

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एवं तापमान में कमी की सम्भावना है। किसान भाई खेत की जोटाई एवं रबी फसल की बोआई करें। रबी फसल के लिए अनाज प्रभेदों का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलों के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करें। किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैंगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलू और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया, तीली,मसूर एवं चना की खेती करें।

धान परिपक्व की अवस्था में है, अतः धान की कटनी करें, यदि वालियों में आमरी कण्ड रोग है तो प्रभावित वालियों को निकाल कर जल दें। खालिहान में धान झाड़कर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारों की दरारों को बन्द कर दें साथ ही साथ मालाथियान 50 ई मी का एक भाग को 300 भाग पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पुरानी बोरियों का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उवाले। भंडार गृह एवं बोरियों के अच्छी तरह मुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पट्टा या पोलिथिन की चादर बिछाकर बोरियों को दीवारों एवम छत से दुरियें बनाकर रखें।

गेहूँ बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करें -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद - एच.यू.डब्ल्यू.-468, डी.बी.डब्ल्यू-39, के-9107, के-1006, के-307, बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई करें। 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद -बी-306, के-8027, के-8962, एच.डी-2643 की बुआई करें। बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैक्सीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपिर्फॉस 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेंटीमीटर खोलकर 100 किन्टल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर बुआई करें। फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड या थायनालोड कोटनली का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोकोटोफॉस ताल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।

बरबटी एवं कुली मुआ पिल्लु के अण्डे एवं नवजात शिशुओं को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाइलपराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से मुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के निवर्णन हेतु किनालाफॉस 25 ई.मी 1.5 लीटर प्रति 500 लीटर पानी के दर में छिड़काव करें और वयस्क पिल्लुओं का नियन्त्रण हेतु ट्राइजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लीटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था में छिड़काव करें। पीला शिरा रोग से निवर्णन हेतु रॉंगी पौधों को सावधानी से उखाड़कर मिट्टी में दबा दें और सफेद मकड़ी के निवर्णन हेतु मेटासिट्रॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्वोर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

राई एवं पीला सरसों राई के उन्नत प्रभेद-शिवानी, पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.बी 101, पूसा मस्टर्ड और पीला सरसों के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एम 05-02 की बुआई एकल फसल के रूप में करें। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें।

चना एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काजुली बीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देवी बीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि में से किसी एक की बुआई करें या तीली-सरसों के साथ अनाज फसल के रूप में लगायें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थोरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थोरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात गैडोथियम क्लरवर या पी.एस.बी 200 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर में उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर बुआई करें।

मसूर मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू.बी.एल -77,एच.के.एल.एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें। कतार से कतार 25 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंटीमीटर रखकर छोटे दानों के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बड़े दानों के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थोरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थोरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर में उपचारित करें।

तीली उन्नत प्रभेद -प्रियम एच टी 307, (आसिंचित अवस्था में) प्रेक्चर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर, कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर बुआई करें। रोग प्रत खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीली की खेती न करें।

टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी 1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, पूसा हाइब्रिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आधा,बी.टी -2। 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर, पाइड ऑफ इंडिया और अर्ली इम्पेड। 3) फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुरा दीपावली, कुआरी, अर्ली मिथेटिक, पूसा केंतकी आदि में से किसी एक का विचड्रि नेट शैड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें। बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राइकोगामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर में उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंटीमीटर रखकर 8 से 10 दिनों के पौधा की रोपाई करें।

सब्जी मटर उन्नत प्रभेद -आर्केल, काशी नन्दिनी, पी.एम-113, पूसा प्रगति एवं अजाद पी -1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंधित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचारित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रख कर बुआई करें।

आलू उन्नत प्रभेद-कुफरी अजीका एवं कुफरी पुत्रगज (अगात), कुफरी कंचन, कुफरी पुत्रक एवं कुफरी लालिम (मधयज),कुफरी सिन्डुरी एवं कुफरी चिपखोल-1 (पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुआई के लिए चयन करें। बुआई के लिए 25 से 30 किन्टल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुआई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम या मेनकोजेव या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें। खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नवजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम मलकप्रति हेक्टेयर के दर से बुआई के समय डालें। नवजन की आधी मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई खुले कतार में डालें। फसल की पतियाँ टेढ़ी मढ़ी होने पर कालडेन 50 एम पी अतः वचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तर्गत पर छिड़काव करें। 25 से 30 दिनों के फसल की निर्याद -गुड्राई कर 162 किलोग्राम यूरिया की वची मात्रा का मुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें।

प्याज उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार, एन 53, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा वाईट, पूसा माधवी, वयवई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलाग्री रेड की विचड्रि उगायें। विचड्रि उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा सिगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद विजस्थली में तापमान बनाये रखने हेतु जन्द अंकुरण होने तक पुआल में ढकें।

पपीता रिंग स्पट वायरस तथा मैजिक वायरस से वचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किसें पूसा डेवार्फ या इन्डिव्यू की रोपाई करें, रोपाई के लिए पौधों से पौधों के बीच की दूरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) >60 (बीड़ाई) >60 सेंटीमीटर (नहर) गड्ढा खोंदें। गड्ढा में खाद की मात्रा - सड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करज व नीम खाली 1 किलोग्राम, डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाइलपराथियोन धुल 50 ग्राम खादें हुए मिट्टी में मिलाकर भर दें तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें।

गोजालि इस मौसम में गोजालि पर खुरहा एवं चक्का रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अतः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से वचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दें। दुग्ध की उत्पादन में बढ़ाव हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एच.ओ.एम-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर, अनुसंधित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमीटर में डालकर बुआई करें।



BAU

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड
 (www.bauranchi.org/www.bau-agriculture.com)
मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- गिरिडीह
 (amfudumka@gmail.com)



IMD

Ref:.. 55/AAS/Dumka, Jharkhand

Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग गँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनों का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	31	31	31	30	30
न्यूनतम तापमान (°c)	17	18	17	17	16
आकाश में बादल की स्थिति	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	54	51	49	50	45
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	34	29	24	28	26
हवा की गति (कि.मी/ घंटा)	2	6	5	6	2
हवा की दिशा	दक्षिण - पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम

फसल की अवस्था:-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लटरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिन,उरद एवं मूँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरक ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैंगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्मी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरपुआ	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापैता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एवं तापमान में कमी की सम्भावना है। किसान भाई खेत की जोटाई एवं रबी फसल की बोआई करें। रबी फसल के लिए अगत प्रभेदों का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलों के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करें। किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैंगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 में 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया ,तीली,मसूर एवं चना की खेती करें।

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है,अतः धान की कटनी करें , यदि वालियों में आमरी कन्द रोग है तो प्रभावित वालियों को निकाल कर जल दें। खालिहान में धान झाड़कर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडागण करें। अनाज का भण्डागण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारों की दरारों को बन्द कर दें साथ ही साथ मालाथियान 50 ई मी का एक भाग को 300 भाग पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पुरानी बोरियों का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उवाले। भंडार गृह एवं बोरियों के अच्छी तरह मुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पट्टा या पोलिथिन की चादर बिछाकर बोरियों को दीवारों एवम छत से दुरियें बनाकर रखें।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करें -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद - एच.यू.डब्ल्यू.-468 ,डी.बी.डब्ल्यू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई करें। 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद -बी-306, के-8027 , के-8962 ,एच.डी-2643 की बुआई करें। बुआई से पहले बीज को बीटावैक्स या वैक्सीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपिर्फॉस 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेंटीमीटर खोलकर 100 किंवदंत सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर बुआई करें।
अरहर	फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड या थावनामोल्ड कोटनली का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोकोटोफॉस ताल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
बरबटी एवं कुली	मुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुओं को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाइलपराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से सुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के निवर्णन हेतु किनालफॉस 25 ई.मी 1.5 लीटर प्रति 500 लीटर पानी के दर में छिड़काव करें और वयस्क पिल्लुओं का नियंत्रण हेतु ट्राइजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लीटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था में छिड़काव करें। पीला शिरा रोग से निवर्णन हेतु रॉंगी पौधों को सावधानी से उखाड़कर मिट्टी में दबा दें और सफेद मकड़ी के निवर्णन हेतु मेटासिटॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्वॉर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
राई एवं पीला सरसों	राई के उन्नत प्रभेद-शिवानी, पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.बी 101, पूसा मस्टर्ड और पीला सरसों के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एम 05-02 की बुआई एकल फसल के रूप में करें। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काजुली बीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (दोरी बीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि में से किसी एक की बुआई करें या तीली-सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप में लगायें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थोरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थोरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात गैरडिऑक्सीम क्लवर या पी.एस.बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर बुआई करें।
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू.बी.एल -77,एच.के.एल.एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें। कतार से कतार 25 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंटीमीटर रखकर छोटे दानों के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बड़े दानों के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थोरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थोरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीली	उन्नत प्रभेद -प्रियम एच टी 307, (आसिंचित अवस्था में) प्रेक्चर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में) , बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर बुआई करें। रोग प्रत खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीली की खेती न करें।
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, पूसा हाइब्रिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आभा,बी.टी -2। 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , पाइड ऑफ इंडिया और अर्ली इम्पेड। 3) फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुसा दीपावली , कुआरी , अर्ली मिथेटिक , पूसा केंतकी आदि में से किसी एक का विचड्रा नेट ग्रेड में ऊँची बीजस्थली बनाकर उगायें। बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राइकोगैमा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉस्फेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंटीमीटर रखकर 8 से 10 दिनों के पौधा की रोपाई करें।
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्सेल , काशी नन्दिनी , पी.एम-113 , पूसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंधित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचारित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुत्रगज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुत्रक एवं कुफरी लालिम (मधयम),कुफरी सिन्डुरी एवं कुफरी चिपखोल-1 (पिछात) , इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुआई के लिए चयन करें। बुआई के लिए 25 से 30 किंवदंतल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुआई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम या मेनकोजेव या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें। खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नवजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम मलकप्रति हेक्टेयर के दर से बुआई के समय डालें। नवजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई खुले कतार में डालें। फसल की पतियाँ टेढ़ी भेदी होने पर कालडेन 50 एम पी अतः बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तर्गत पर छिड़काव करें। 25 से 30 दिनों के फसल की निर्याद -गुड्राई कर 162 किलोग्राम यूरिया की बची मात्रा का सुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें।
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डाक रेड ,पुसा वाईट ,पुसा माधवी, वयवई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलारी रेड की विचड्रा उगायें। विचड्रा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा सिगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद विजस्थली में तापमान बनाये रखने हेतु जन्द अंकुण होने तक पुआल से ढकें।
पपीता	रिंग स्पट वायरस तथा मैजिक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किसें पुसा डेवार्फ या इन्डिव्यू की रोपाई करें , रोपाई के लिए पौधों से पौधों के बीच की दूरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) >60 (बीड़ाई) >60 सेंटीमीटर (नहर) गड्ढा खोंदें। गड्ढा में खाद की मात्रा - सड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करज व नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाइलपराथियोन धुल 50 ग्राम खादें हुए मिट्टी में मिलाकर भर दें तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें।
गोजालि चारा फसल	इस मौसम में गोजालि पर खुरदर एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अतः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दें। दुग्ध की उत्पादन में बढ़ाव हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एच.ओ.एम-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंधित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमीटर में डालकर बुआई करें।

(राजू लिन्डा)

(डॉ. ए. वदर)

(डॉ.पी.बी.साहा)



BAU

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड
(www.bauranchi.org/www.bau-agriculture.com)



IMD

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- धनबाद
(amfudumka@gmail.com)

Ref:.. 55/AAS/Dumka, Jharkhand

Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग गँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनों का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

Table with 6 columns: Parameter, 14 नवम्बर, 15 नवम्बर, 16 नवम्बर, 17 नवम्बर, 18 नवम्बर. Rows include: वर्षापात (मिलीमीटर), अधिकतम तापमान (°C), न्यूनतम तापमान (°C), आकाश में बादल की स्थिति, अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%), न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%), हवा की गति (कि.मी/घंटा), हवा की दिशा.

फसल की अवस्था:-

Table with 4 columns: फसल, अवस्था, फसल, अवस्था. Rows include: धान, चना, राई, पीला सरसों और मटर, तिल,उरद एवं मूँगफली, टमाटर, बैंगन,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी, सरपौआ, पापैता.

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एवं तापमान में कमी की सम्भावना है। किसान भाई खेत की जोटाई एवं रबी फसल की बोआई करें। रबी फसल के लिए अनाज प्रभेदों का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलों के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करें। किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैंगन,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलू और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 में 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरैया, तीली,मसूर एवं चना की खेती करें।

धान परिपक्व की अवस्था में है, अतः धान की कटनी करें, यदि बालियों में आमरी कण्ड रोग है तो प्रभावित बालियों को निकाल कर जल में खालिहान में धान झाड़कर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारों की दरगो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई मी का एक भाग को 300 भाग पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पुरानी बोरियों का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उवाले। भंडार गृह एवं बोरियों के अच्छी तरह मुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पट्टा या पोलिथिन की चादर बिछाकर बोरियों को दीवारों एवम छत से दुरियॉ बनावकर रखें।

गेहूँ बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करें -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद - एच.यू.डब्ल्यू.-468, डी.बी.डब्ल्यू-39, के-9107, के-1006, के-307, बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई करें। 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद -बी-306, के-8027, के-8962, एच.डी-2643 की बुआई करें। बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैक्सीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपिर्फॉस 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर में घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार में कतार दूरी 18 से 20 सेंटीमीटर खोलकर 100 किन्टल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर में डालकर बुआई करें।

अरहर फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड या थावनामोल्ड कोटनली का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर में घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोकोटोफॉस ताल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर में घोल बनाकर का छिड़काव करें।

बरबटी एवं कुली मुआ पिल्लु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुओं को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाइलपराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के निवर्णन हेतु किनालफॉस 25 ई.मी 1.5 लीटर प्रति 500 लीटर पानी के दर में छिड़काव करें और वयस्क पिल्लुओं का निवचन हेतु ट्राइजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लीटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था में छिड़काव करें। पीला शिरा रोग से निवर्णन हेतु रॉंगी पौधों को सावधानी से उखाड़कर मिट्टी में दबा दें और सफेद मकड़ी के निवर्णन हेतु मेटासिट्रॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्वॉर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

राई एवं पीला सरसों राई के उन्नत प्रभेद-शिवानी, पूसा बोल्ड, एन.आर.सी.एच.बी 101, पूसा मस्टर्ड और पीला सरसों के उन्नत प्रभेद- एच.आर.सी.एच.ए.एम 05-02 की बुआई एकल फसल के रूप में करें। खेत तैयार कर कतार में कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर में डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें।

चना एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काजुली बीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देवी बीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि में से किसी एक की बुआई करें या तीली-सरसों के साथ अनाज फसल के रूप में लगायें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थीरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर में उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात गैडोथियोस क्लवर या पी.एस.बी 200 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर में उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार में कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर में डालकर पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर बुआई करें।

मसूर मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू.बी.एल -77,एच.के.एल.एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें। कतार में कतार 25 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर में डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंटीमीटर रखकर छोटे दानों के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बड़े दानों के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थीरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर में उपचारित करें।

तीली उन्नत प्रभेद -प्रियम एच टी 307, (आसिंचित अवस्था में) प्रेक्चर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर, कतार में कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर बुआई करें। रोग प्रत खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीली की खेती न करें।

टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी 1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, पूसा हाइब्रिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आधा,बी.टी -2। 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर, पाइड ऑफ इंडिया और अर्ली इम्पेड। 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुरा दीपावली, कुआरी, अर्ली मिथेटिक, पूसा केंतकी आदि में से किसी एक का विचड्रि नेट शैड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें। बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राइकोगैमा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर में उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर में गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर में डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंटीमीटर रखकर 8 से 10 दिनों के पौधा की रोपाई करें।

सब्जी मटर उन्नत प्रभेद -आर्सेल, काशी नन्दिनी, पी.एम-113, पूसा प्रगति एवं अजाद पी -1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंधित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर में उपचारित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचारित कर कतार में कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रख कर बुआई करें।

आलू उन्नत प्रभेद-कुफरी अजीका एवं कुफरी पुत्रगज (अगात), कुफरी कंचन, कुफरी पुकर एवं कुफरी लालिम (मधयज),कुफरी सिन्डुरी एवं कुफरी चिपखोल-1 (पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुआई के लिए चयन करें। बुआई के लिए 25 से 30किन्टल बीज प्रति हेक्टेयर के दर में लेकर बुआई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम या मेनकोजेव या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें। खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नत्रजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम मल्फरप्रति हेक्टेयर के दर से बुआई के समय डालें। नत्रजन की आधी मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई खुले कतार में डालें। फसल की पतियाँ टेढ़ी मेढ़ी होने पर कालडेन 50 एम पी अतः वचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर में घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तर्गत पर छिड़काव करें। 25 से 30 दिनों के फसल की निर्याद -गुड्राई कर 162 किलोग्राम यूरिया की वची मात्रा का भुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें।

प्याज उन्नत प्रभेद -पुरा रेड, पूरा रत्नार, एच 53, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, पूरा वाईट, पूरा माधवी, वयवई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलाग्री रेड की विचड्रि उगायें। विचड्रि उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा सिगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर में बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद विजस्थली में तापमान बनाये रखने हेतु जन्द अंकुण होने तक पुआल से ढकें।

पपीता रिंग स्पट वायरस तथा मैजिक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किसें पुरा डेवार्फ या इन्डियू की रोपाई करें, रोपाई के लिए पौधों से पौधों के बीच की दूरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) >60 (बीड़ाई) >60 सेंटीमीटर (नहर) गड्ढा खोंदें। गड्ढा में खाद की मात्रा - सड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करज व नीम खाली 1 किलोग्राम, डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाइलपराथियोन धुल 50 ग्राम खादें हुए मिट्टी में मिलाकर भर दें तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें।

गोजालि इस मौसम में गोजालि पर खुरहा एवं चक्का रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अतः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे। दुग्ध की उत्पादन में बढ़ाव हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एच.ओ.एम-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर, अनुसंधित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार में कतार 20 सेंटीमीटर में डालकर बुआई करें।



BAU

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड
 (www.bauranchi.org/www.bau-agriculture.com)
मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- जामताड़ा
 (amfudumka@gmail.com)



IMD

Ref:.. 55/AAS/Dumka, Jharkhand

Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग गँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनों का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	30	30	30	30	29
न्यूनतम तापमान (°c)	17	17	16	15	15
आकाश में बादल की स्थिति	आंशिक रूप में बादल छाये रहेंगे	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	56	49	45	48	44
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	32	29	22	26	23
हवा की गति (कि.मी/ घंटा)	0	5	5	4	3
हवा की दिशा	दक्षिण	उत्तर - पश्चिम	पश्चिम	उत्तर - पश्चिम	पूरब

फसल की अवस्था:-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लटरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंड़ी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिन,उरद एवं मूँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरक ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैंगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्मी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरपत्ता	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापैता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एवं तापमान में कमी की सम्भावना है। किसान भाई खेत की जोटाई एवं रबी फसल की बोआई करें। रबी फसल के लिए अगत प्रभेदों का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलों के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करें। किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैंगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरीया ,तीली,मसूर एवं चना की खेती करें।

धान परिपक्व की अवस्था में है, अतः धान की कटनी करें , यदि वालियों में आमरी कन्ड रोप है तो प्रभावित वालियों को निकाल कर जल दें। खालिहान में धान झाड़कर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारों की दरगो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई मी का एक भाग को 300 भाग पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पुरानी बोरियों का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उवाले। भंडार गृह एवं बोरियों के अच्छी तरह मुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पट्टा या पोलिथिन की चादर बिछाकर बोरियों को दीवारों एवम छत से दुरियें बनाकर रखें।

गेहूँ बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करें -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद - एच .यू. डब्ल्यू.-468 ,डी.बी. डब्ल्यू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच .डी-2967, एच .डी-2733 की बुआई करें। 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद -बी-306, के-8027 , के-8962 ,एच .डी-2643 की बुआई करें। बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैक्सीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपिर्फॉस 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेंटीमीटर रखकर 100 किंवा 120 सेंटीमीटर गहरा खाद एवं सिंचित अवस्था में घुरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर बुआई करें।

अरहर फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड या थाबनोलाइड कोटनली का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोकोटोफॉस ताल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।

बरबटी एवं कुली मुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुओं को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाइलपराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से मुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के निवर्णन हेतु किनालफॉस 25 ई. मी 1.5 लीटर प्रति 500 लीटर पानी के दर में छिड़काव करें और वयस्क पिल्लुओं का निवचन हेतु ट्राइजोफॉस या डाइक्लोथेनॉस 1 लीटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था में छिड़काव करें। पीला शिरा रोग से निवर्णन हेतु रोंगी पौधों को सावधानी से उखाड़कर मिट्टी में दबा दें और सफेद मकड़ी के निवर्णन हेतु मेटासिट्रॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्वोर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

राई एवं पीला सरसों राई के उन्नत प्रभेद-शिवानी, पूसा बोल्ड, एन .आर . सी . एच .बी 101, पूसा मस्टर्ड और पीला सरसों के उन्नत प्रभेद- एच .आर . सी .वाई . एम 05-02 की बुआई एकल फसल के रूप में करें। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद घुरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें।

चना एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काजुली वीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू .आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देवी वीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि में से किसी एक की बुआई करें या तीली-सरसों के साथ अनाज फसल के रूप में लगायें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थीरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात गैडोथ्रियम क्लरवर या पी . एस . बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद घुरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर बुआई करें।

मसूर मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू . बी .एल -77,एच के . एल . एस . -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें। कतार से कतार 25 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी .ए.पी .40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंटीमीटर रखकर छोटे दानों के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बड़े दानों के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थीरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।

तीली उन्नत प्रभेद -प्रियम एच टी 307, (आसिंचित अवस्था में) प्रेक्चर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में) , बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर बुआई करें। रोग प्रत खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीली की खेती न करें।

टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी 1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, पूसा हाइब्रिड -1, मुश्का (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आधा,बी.टी -2। 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , पाइड ऑफ इंडिया और अर्ली इम्पेड। 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुरा दीपावली , कुआरी , अर्ली मिथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का विचड्रि नेट शैड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें। बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राइकोगामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु घुरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉस्फेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंटीमीटर रखकर 8 से 10 दिनों के पौधा की रोपाई करें।

सब्जी मटर उन्नत प्रभेद -आर्सेल , काशी नन्दिनी , पी .एम-113 , पूसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंधित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, घुरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचारित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रख कर बुआई करें।

आलू उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुत्रगज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुत्रक एवं कुफरी लालिम (मधयज),कुफरी सिन्डुरी एवं कुफरी चिपखोल-1(पिछात) , इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुआई के लिए चयन करें। बुआई के लिए 25 से 30किंवा 40 बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुआई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम या मेनकोजेव या रेडोमिल एम .जेड .1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें। खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नवजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम मल्फरप्रति हेक्टेयर के दर से बुआई के समय डालें। नवजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई खुले कतार में डालें। फसल की पतियाँ टेढ़ी मेढ़ी होने पर कालडेन 50 एम पी अतः बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तर्गत पर छिड़काव करें। 25 से 30 दिनों के फसल की निम्न-गुड़ाई कर 162 किलोग्राम घुरिया की बची मात्रा का मुरकाव प्रति हेक्टेर की दर से करें।

प्याज उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एच 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पूसा वाईट ,पूसा माधवी, वयर्ड सलेक्सन, पटना वाईट, बेलागी रेड की विचड्रि उगायें। विचड्रि उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा सिगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद विजस्थली में तापमान बनाये रखने हेतु जन्द अंकुण होने तक पुआल से ढकें।

पपीता रिंग स्पट वायरस तथा मैजिक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किसें पूसा डेवार्फ या इन्डिब्यू की रोपाई करें , रोपाई के लिए पौधों से पौधों के बीच की दूरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) >60 (बीड़ाई) >60 सेंटीमीटर (गहरा) गडदा खोंदें। गडदा में खाद की मात्रा - सड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करज व नीम खाली 1 किलोग्राम,डी.ए.पी . 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाइलपराथियोन धुल 50 ग्राम खादें हुए मिट्टी में मिलाकर भर दें तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें।

गोजालि चारा फसल इस मौसम में गोजालि पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अतः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ .एम .डी . का टीकाकरण करा दे। दुग्ध की उत्पादन में बढ़ाव हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एच.ओ.एम-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंधित रसायनिक खाद की मात्रा घुरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमीटर में डालकर बुआई करें।



BAU

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड
 (www.bauranchi.org/www.bau-agriculture.com)
मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- कोडरमा
 (amfudumka@gmail.com)



IMD

Ref:.. 55/AAS/Dumka, Jharkhand

Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग गँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनों का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	31	31	31	30	30
न्यूनतम तापमान (°c)	17	18	17	17	16
आकाश में बादल की स्थिति	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	54	51	49	50	45
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	34	29	24	28	26
हवा की गति (कि.मी/ घंटा)	2	6	5	6	2
हवा की दिशा	दक्षिण - पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम

फसल की अवस्था:-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लटरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिन,उरद एवं मूँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरक ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैंगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्मी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरपत्ता	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापैता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एवं तापमान में कमी की सम्भावना है। किसान भाई खेत की जोटाई एवं रबी फसल की बोआई करें। रबी फसल के लिए अनाज प्रभेदों का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलों के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करें। किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैंगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया ,तीली,मसूर एवं चना की खेती करें।

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है,अतः धान की कटनी करें , यदि वालियों में आमरी कन्द रोग है तो प्रभावित वालियों को निकाल कर जल दें। खालिहान में धान झाड़कर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडागण करें। अनाज का भण्डागण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारों की दरगो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई मी का एक भाग को 300 भाग पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पुरानी बोरियों का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उवाले। भंडार गृह एवं बोरियों के अच्छी तरह मुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पट्टा या पोलिथिन की चादर बिछाकर बोरियों को दीवारों एवम छत से दुरियें बनाकर रखें।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करें -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद - एच .यू. डब्ल्यू.-468 ,डी.बी. डब्ल्यू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच .डी-2967, एच .डी-2733 की बुआई करें। 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद -बी-306, के-8027 , के-8962 ,एच .डी-2643 की बुआई करें। बुआई से पहले बीज को बीटावैक्स या वैक्सीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपिर्फॉस 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेंटीमीटर रखकर 100 किन्टल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर बुआई करें। फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड या थावनोलाइड कोटनली का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोकोटोफॉस ताल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
अरहर	मुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुओं को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाइलपराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से सुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के निवर्णन हेतु किनालफॉस 25 ई. मी 1.5 लीटर प्रति 500 लीटर पानी के दर में छिड़काव करें और वयस्क पिल्लुओं का नियंत्रण हेतु ट्राइजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लीटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था में छिड़काव करें। पीला शिरा रोग से निवर्णन हेतु रॉंगी पौधों को सावधानी से उखाड़कर मिट्टी में दबा दें और सफेद मकड़ी के निवर्णन हेतु मेटासिट्रॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्वॉर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
राई एवं पीला सरसों	राई के उन्नत प्रभेद-शिवानी, पूसा बोल्ड, एन .आर . सी . एच .बी 101, पूसा मस्टर्ड और पीला सरसों के उन्नत प्रभेद- एन .आर . सी .वार्ड . एम 05-02 की बुआई एकल फसल के रूप में करें। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काजुली बीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (द्वितीय बीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि में से किसी एक की बुआई करें या तीली-सरसों के साथ अनाज फसल के रूप में लगायें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थोरम को 1 : 2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थोरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात गैडोथ्रिबिम क्लवर या पी . एस . बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर बुआई करें।
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी .एल -77,एच के . एल . एस . -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें। कतार से कतार 25 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंटीमीटर रखकर छोटे दानों के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बड़े दानों के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थोरम को 1 : 2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थोरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीली	उन्नत प्रभेद -प्रियम एच टी 307, (आसिंचित अवस्था में) ग्रेडर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में) , बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर बुआई करें। रोग प्रत खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीली की खेती न करें।
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, पूसा हाइब्रिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आधा,बी.टी -2। 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , पाइड ऑफ इंडिया और अर्ली इम्पेड। 3) फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुरा दीपावली , कुआरी , अर्ली मिथेडिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का विचड्रा नेट शैड में ऊँची बीजस्थली बनाकर उगायें। बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राइकोगैमा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉस्फेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंटीमीटर रखकर 8 से 10 दिनों के पौधा की रोपाई करें।
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्सेल , काशी नन्दिनी , पी .एम-113 , पूसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंधित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचारित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुत्रगज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुकर एवं कुफरी लालिम (मधयम),कुफरी सिन्डुरी एवं कुफरी चिपखोल-1 (पिछात) , इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुआई के लिए चयन करें। बुआई के लिए 25 से 30किन्टल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुआई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम या मेनकोजेब या रेडोमिल एम .जेड .1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें। खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नवजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम मलकप्रति हेक्टेयर के दर से बुआई के समय डालें। नवजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई खुले कतार में डालें। फसल की पतियाँ टेढ़ी भेदी होने पर कालडेन 50 एम पी अतः वचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तर्गत पर छिड़काव करें। 25 से 30 दिनों के फसल की निर्याद -गुड्राई कर 162 किलोग्राम यूरिया की वची मात्रा का सुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें।
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डाक रेड ,पूसा वाईट ,पूसा माधवी, वयर्ड सलेक्सन, पटना वाईट, बेलागी रेड की विचड्रा उगायें। विचड्रा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा सिगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद विजस्थली में तापमान बनाये रखने हेतु जन्द अंकुरण होने तक पुआल से ढकें।
पपीता	डिंग स्पार्ट वायरस तथा मैजिक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किसें पूसा डेवार्फ या इन्डिव्यू की रोपाई करें , रोपाई के लिए पौधों से पौधों के बीच की दूरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) >60 (बीड़ाई) >60 सेंटीमीटर (नहर) गड्ढा खोंदें। गड्ढा में खाद की मात्रा - सड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करज व नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाइलपराथियोन धुल 50 ग्राम खादें हुए। मिट्टी में मिलाकर भर दे तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें।
गोजालि चारा फसल	इस मौसम में गोजालि पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अतः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ .एम .डी . का टीकाकरण करा दे। दुग्ध की उत्पादन में बढ़ाव हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एच.ओ.एम-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंधित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमीटर में डालकर बुआई करें।



BAU

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड
 (www.bauranchi.org/www.bau-agriculture.com)
मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- साहिबगंज
 (amfudumka@gmail.com)



IMD

Ref:.. 55/AAS/Dumka, Jharkhand

Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग गँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनों का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	30	30	30	30	29
न्यूनतम तापमान (°c)	17	18	17	17	16
आकाश में बादल की स्थिति	आंशिक रूप में बादल छाये रहेंगे	आंशिक रूप में बादल छाये रहेंगे	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	57	51	48	49	48
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	36	31	25	28	26
हवा की गति (कि.मी/ घंटा)	0	4	4	2	4
हवा की दिशा	दक्षिण	पश्चिम	पश्चिम	उत्तर - पश्चिम	उत्तर - पुरुब

फसल की अवस्था:-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लटरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिन,उरद एवं मूँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरक ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैंगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्मी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरपत्ता	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापैता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एवं तापमान में कमी की सम्भावना है। किसान भाई खेत की जोटाई एवं रबी फसल की बोआई करें। रबी फसल के लिए अनाज प्रभेदों का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलों के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करें। किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैंगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया ,तीसी,मसूर एवं चना की खेती करें।

धान परिपक्व की अवस्था में है, अतः धान की कटनी करें , यदि बालियों में आमरी कण्ड रोग है तो प्रभावित बालियों को निकाल कर जल दें। खालिहान में धान झाड़कर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारों की दरारों को बन्द कर दें साथ ही साथ मालाथियान 50 ई मी का एक भाग को 300 भाग पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पुरानी बोरियों का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उवाले। भंडार गृह एवं बोरियों के अच्छी तरह मुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पट्टा या पोलिथिन की चादर बिछाकर बोरियों को दीवारों एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखें।

गेहूँ बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करें -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद - एच .यू. डब्ल्यू.-468 ,डी.बी. डब्ल्यू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच .डी-2967, एच .डी-2733 की बुआई करें। 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद -बी-306, के-8027 , के-8962 ,एच .डी-2643 की बुआई करें। बुआई से पहले बीज को बीटावैक्स या वैक्सीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपिर्फॉस 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार में कतार दूरी 18 से 20 सेंटीमीटर रखकर 100 किंवा 120 सेमीटर गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर बुआई करें।

अरहर फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड या थाबेनोलाइड कोटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोकोटोफॉस ताल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।

बरबटी एवं कुली मुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुओं को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाइलपराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से सुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के निवर्णन हेतु किनालाफॉस 25 ई. मी 1.5 लीटर प्रति 500 लीटर पानी के दर में छिड़काव करें और वयस्क पिल्लुओं का नियंत्रण हेतु ट्राइजोफॉस या डाइक्लोरोवॉस 1 लीटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था में छिड़काव करें। पीला शिरा रोग से निवर्णन हेतु रोंगी पौधों को सावधानी से उखाड़कर मिट्टी में दबा दें और सफेद मकड़ी के निवर्णन हेतु मेटासिटॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्वोर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

राई एवं पीला सरसों राई के उन्नत प्रभेद-शिवानी, पूसा बोल्ड, एन .आर . सी . एच .बी 101, पूसा मस्टर्ड और पीला सरसों के उन्नत प्रभेद- एच .आर . सी .वार्ड . एम 05-02 की बुआई एकल फसल के रूप में करें। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें।

चना एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काजुली वीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (द्वितीय वीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि में से किसी एक की बुआई करें या तीसी-सरसों के साथ अनाज फसल के रूप में लगायें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थोरम को 1 : 2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थोरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात गैडोथिअियम क्लरवर या पी . एस . बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर बुआई करें।

मसूर मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी .एल -77,एच के . एल . एस . -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें। कतार से कतार 25 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी .ए.पी .40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंटीमीटर रखकर छोटे दानों के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बड़े दानों के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थोरम को 1 : 2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थोरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।

तीसी उन्नत प्रभेद -प्रियम एच टी 307, (आसिंचित अवस्था में) प्रेक्चर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में) , बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर बुआई करें। रोग प्रत खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीसी की खेती न करें।

टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी 1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण संपत्ता, स्वर्ण समृद्धि, पूसा हाइब्रिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आधा,बी.टी -2। 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , पाइड ऑफ इंडिया और अर्ली इम्पेड। 3) फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुरा दीपावली , कुआरी , अर्ली मिथेटिक , पूसा केंतकी आदि में से किसी एक का विचड्रा नेट शैड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें। बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राइकोगामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉस्फेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंटीमीटर रखकर 8 से 10 दिनों के पौधा की रोपाई करें।

सब्जी मटर उन्नत प्रभेद -आर्सेल , काशी नन्दिनी , पी .एम-113 , पूसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंधित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचारित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रख कर बुआई करें।

आलू उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुत्रगज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुकर एवं कुफरी लालिम (मधयम),कुफरी सिन्डुरी एवं कुफरी चिपखोल-1 (पिछात) , इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुआई के लिए चयन करें। बुआई के लिए 25 से 30किंवा 40 बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुआई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम या मेनकोजेब या रेडोमिल एम .जेड .1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें। खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नवजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम मलकप्रति हेक्टेयर के दर से बुआई के समय डालें। नवजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई खुले कतार में डालें। फसल की पतियाँ टेढ़ी भेदी होने पर कालडेन 50 एम पी अतः वचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तर्गत पर छिड़काव करें। 25 से 30 दिनों के फसल की निर्याद -गुड्राई कर 162 किलोग्राम यूरिया की वची मात्रा का सुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें।

प्याज उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एच 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पूसा वाईट ,पूसा माधवी, वयवई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलागी रेड की विचड्रा उगायें। विचड्रा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा सिगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद विजस्थली में तापमान बनाये रखने हेतु जन्द अंकुरण होने तक पुआल से ढकें।

पपीता रिंग स्पट वायरस तथा मैजिक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किसें पूसा डेवार्फ या इन्डिब्यू की रोपाई करें , रोपाई के लिए पौधों से पौधों के बीच की दूरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) >60 (बीड़ाई) >60 सेंटीमीटर (नहर) गड्ढा खोंदें। गड्ढा में खाद की मात्रा - सड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करज व नीम खाली 1 किलोग्राम,डी.ए.पी . 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाइलपराथियोन धुल 50 ग्राम खादें हुए। मिट्टी में मिलाकर भर दें तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें।

गोजालि चारा फसल इस मौसम में गोजालि पर खुरदर एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अतः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ .एम .डी . का टीकाकरण करा दें। दुग्ध की उत्पादन में बढ़ाव हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट.यू.पी .ओ-812,एच.ओ.एम-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंधित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमीटर में डालकर बुआई करें।



BAU

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड
(www.bauranchi.org/www.bau-eagriculture.com)



IMD

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- गोड्डा
(amfudumka@gmail.com)

Ref:.. 55/AAS/Dumka, Jharkhand

Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग गँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनों का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

Table with 6 columns: Parameter, 14 नवम्बर, 15 नवम्बर, 16 नवम्बर, 17 नवम्बर, 18 नवम्बर. Rows include: वर्षापात (मिलीमीटर), अधिकतम तापमान (°C), न्यूनतम तापमान (°C), आकाश में बादल की स्थिति, अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%), न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%), हवा की गति (कि.मी/ घंटा), हवा की दिशा.

फसल की अवस्था:-

Table with 4 columns: फसल, अवस्था, फसल, अवस्था. Rows include: धान, चना, राई, पीला सरसों और मटर, तिल,उरद एवं मूँगफली, टमाटर, बैंगन, पत्तागोभी, एवं फूलगोभी, सरपौआ, पापैता.

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एवं तापमान में कमी की सम्भावना है। किसान भाई खेत की जोटाई एवं रबी फसल की बोआई करें। रबी फसल के लिए अनाज प्रभेदों का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलों के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करें। किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैंगन,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलू और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया, तीली,मसूर एवं चना की खेती करें।

धान परिपक्व की अवस्था में है, अतः धान की कटनी करें, यदि बालियों में आमरी कण्ड रोग है तो प्रभावित बालियों को निकाल कर जल में खालिहान में धान झाड़कर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारों की दरारों को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई मी का एक भाग को 300 भाग पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पुरानी बोरियों का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उवाले। भंडार गृह एवं बोरियों के अच्छी तरह मुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पट्टा या पोलिथिन की चादर बिछाकर बोरियों को दीवारों एवम छत से दुरियों बनाकर रखें।

गेहूँ बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करें -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद - एच.यू.डब्ल्यू.-468, डी.बी.डब्ल्यू-39, के-9107, के-1006, के-307, बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई करें। 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद -बी-306, के-8027, के-8962, एच.डी-2643 की बुआई करें। बुआई से पहले बीज को बीटावैक्स या वैक्टिस्टान या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपिर्फॉस 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेंटीमीटर खोलकर 100 किन्टल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर बुआई करें। फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड या थाबनोलाइड कोटनली का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोकोटोफॉस ताल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।

बरबटी एवं कुली मुआ पिलु के अण्डे एवं नवजात शिशुओं को एकत्रित कर नट कर दे साथ ही साथ मिथाइलपराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से मुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के निचंत्रण हेतु किनालाफॉस 25 ई.मी 1.5 लीटर प्रति 500 लीटर पानी के दर में छिड़काव करें और वयस्क पिल्लुओं का नियंत्रण हेतु ट्राइजोफॉस या डाईक्लोवॉस 1 लीटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था में छिड़काव करें। पीला शिरा रोग से निचंत्रण हेतु रॉंगी पौधों को सावधानी से उखाड़कर मिट्टी में दबा दें और सफेद मकड़ी के निचंत्रण हेतु मेटासिट्रॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्वॉर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

राई एवं पीला सरसों राई के उन्नत प्रभेद-शिवानी, पूसा बोल्ड, एन.आर.सी.एच.बी 101, पूसा मस्टर्ड और पीला सरसों के उन्नत प्रभेद- एच.आर.सी.वाई.एच.एम 05-02 की बुआई एकल फसल के रूप में करें। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें।

चना एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काजुली बीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देवी बीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि में से किसी एक की बुआई करें या तीली-सरसों के साथ अनाज फसल के रूप में लगायें। बुआई से पहले बीज को वैक्टिस्टान एवं थोरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्टिस्टान 1 ग्राम एवं थोरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात गैडोथिअयम क्लरर या पी.एस.बी 200 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर बुआई करें।

मसूर मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू.बी.एल -77,एच.के.एल.एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें। कतार से कतार 25 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंटीमीटर रखकर छोटे दानों के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बड़े दानों के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें। बुआई से पहले बीज को वैक्टिस्टान एवं थोरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्टिस्टान 1 ग्राम एवं थोरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।

तीली उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 307, (आसिंचित अवस्था में) प्रेक्चर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर, कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर बुआई करें। रोग प्रत खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीली की खेती न करें।

टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी 1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, पूसा हाइब्रिड -1, मुश्का (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आधा,बी.टी -2। 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर, पाइड ऑफ इंडिया और अर्ली इम्पेड। 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुरा दीपावली, कुआरी, अर्ली मिथेटिक, पूसा केतकी आदि में से किसी एक का विचड्रि नेट शैड में ऊँची बीजस्थली बनाकर उगायें। बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राइकोगैमा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंटीमीटर रखकर 8 से 10 दिनों के पौधा की रोपाई करें।

सब्जी मटर उन्नत प्रभेद -आर्केल, काशी नन्दिनी, पी.एम-113, पूसा प्रगति एवं अनाद पी -1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंधित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचारित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रख कर बुआई करें।

आलू उन्नत प्रभेद-कुफरी अजीका एवं कुफरी पुत्रगज (अगात), कुफरी कंचन, कुफरी पुकर एवं कुफरी लालिम (मधयम),कुफरी सिन्डुरी एवं कुफरी चिपखोल-1 (पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुवाई के लिए चयन करें। बुआई के लिए 25 से 30किन्टल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुवाई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम या मेनकोजेव या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें। खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नवजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम मल्फरप्रति हेक्टेयर के दर से बुवाई के समय डालें। नवजन की आधी मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई खुले कतार में डालें। फसल की पतियाँ टेढ़ी मेढ़ी होने पर कालडेन 50 एच पी अतः वचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तर्गत पर छिड़काव करें। 25 से 30 दिनों के फसल की निर्याद -गुड्राई कर 162 किलोग्राम यूरिया की वची मात्रा का मुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें।

प्याज उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार, एच 53, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्रीफाउण्ड डाक रेड, पूसा वाईट, पूसा माधवी, वयवई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलाग्री रेड की विचड्रि उगायें। विचड्रि उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा सिगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद विजस्थली में तापमान बनाये रखने हेतु जन्द अंकुरण होने तक पुआल में ढकें।

पपीता रिंग स्पट वायरस तथा मैजिक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किसें पूसा डेवार्फ या इन्डिब्यू की रोपाई करें, रोपाई के लिए पौधों से पौधों के बीच की दूरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) >60 (बीड़ाई) >60 सेंटीमीटर (नहर) गड्ढा खोंदें। गड्ढा में खाद की मात्रा - सड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करज व नीम खाली 1 किलोग्राम,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाइलपराथियोन धुल 50 ग्राम खादें हुए मिट्टी में मिलाकर भर दें तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें।

गोजालि इस मौसम में गोजालि पर खुरहा एवं चक्का का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अतः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे। दुग्ध की उत्पादन में बढ़ाव हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट.यू.पी.ओ-812,एच.ओ.एम-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर, अनुसंधित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमीटर में डालकर बुआई करें।

(राजू लिन्डा)

(डॉ. ए. वट्ट)

(डॉ.पी. वी.साहा)



BAU

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा
क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड
(www.bauranchi.org/www.bau-agriculture.com)



IMD

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- पाकुड़
(amfudumka@gmail.com)

Ref:.. 55/AAS/Dumka, Jharkhand

Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग गँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनों का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

Table with 6 columns: Parameter, 14 नवम्बर, 15 नवम्बर, 16 नवम्बर, 17 नवम्बर, 18 नवम्बर. Rows include: वर्षापात (मिलीमीटर), अधिकतम तापमान (°C), न्यूनतम तापमान (°C), आकाश में बादल की स्थिति, अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%), न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%), हवा की गति (कि.मी/ घंटा), हवा की दिशा.

फसल की अवस्था:-

Table with 4 columns: फसल, अवस्था, फसल, अवस्था. Rows include: धान, चना, राई, पीला सरसों और मटर, तिल,उरद एवं मूँगफली, टमाटर, बैंगन,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी, सरपत्ता, पापैता.

मौसम पूर्वानुमान पर आधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनों के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एवं तापमान में कमी की सम्भावना है। किसान भाई खेत की जोटाई एवं रबी फसल की बोआई करें। रबी फसल के लिए अनाज प्रभेदों का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलों के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करें। किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैंगन,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलू और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया, तीली,मसूर एवं चना की खेती करें।

धान परिपक्व की अवस्था में है, अतः धान की कटनी करें, यदि बालियों में आमरी कन्ड रोम है तो प्रभावित बालियों को निकाल कर जल दें। खालिहान में धान झाड़कर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारों की दरारों को बन्द कर दें साथ ही साथ मालाथियान 50 ई मी का एक भाग को 300 भाग पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। पुरानी बोरियों का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उवाले। भंडार गृह एवं बोरियों के अच्छी तरह मुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पट्टा या पोलिथिन की चादर बिछाकर बोरियों को दीवारों एवम छत से दुरियों बनाकर रखें।

गेहूँ बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करें -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद - एच.यू.डब्ल्यू.-468, डी.बी.डब्ल्यू-39, के-9107, के-1006, के-307, बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई करें। 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा में पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद -बी-306, के-8027, के-8962, एच.डी-2643 की बुआई करें। बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैक्सीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपिर्फॉस 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेंटीमीटर खोलकर 100 किन्टल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर बुआई करें।

अरहर फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड या थाबनोलाइड कोटनली का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोकोटोफॉस ताल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।

बरबटी एवं कुली मुआ पिलु के अण्डे एवं नवजात शिशुओं को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाइलपराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से मुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के निवर्णन हेतु किनालाफॉस 25 ई.मी 1.5 लीटर प्रति 500 लीटर पानी के दर में छिड़काव करें और वयस्क पिल्लुओं का नियन्त्रण हेतु ट्राइजोफॉस या डाईक्लोवॉस 1 लीटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था में छिड़काव करें। पीला शिरा रोम से निवर्णन हेतु रोंगी पौधों को सावधानी से उखाड़कर मिट्टी में दबा दें और सफेद मकड़ी के निवर्णन हेतु मेटासिट्रॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्वोर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

राई एवं पीला सरसों राई के उन्नत प्रभेद-शिवानी, पूसा बोल्ड, एन.आर.सी.एच.बी 101, पूसा मस्टर्ड और पीला सरसों के उन्नत प्रभेद- एच.आर.सी.वाई.एच.एम 05-02 की बुआई एकल फसल के रूप में करें। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें।

चना एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काजुली वीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देवी वीज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि में से किसी एक की बुआई करें या तीली-सरसों के साथ अनाज फसल के रूप में लगायें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थीरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात गैडोसिप्रियम क्लरर या पी.एस.बी 200 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉस्फोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर पर बुआई करें।

मसूर मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू.बी.एल -77,एच.के.एल.एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें। कतार से कतार 25 सेंटीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंटीमीटर रखकर छोटे दानों के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बड़े दानों के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें। बुआई से पहले बीज को वैक्सीन एवं थीरम को 1:2 के अनुपात में (वैक्सीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।

तीली उन्नत प्रभेद -प्रियम एच टी 307, (आसिंचित अवस्था में) प्रेक्चर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर, कतार से कतार 30 सेंटीमीटर खोलकर बुआई करें। रोम गन्त खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीली की खेती न करें।

टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी 1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण सम्पदा, स्वर्ण समृद्धि, पूसा हाइब्रिड -1, मुश्का (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आधा,बी.टी -2। 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर, पाइड ऑफ इंडिया और अर्ली इम्पेड। 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुरा दीपावली, कुआरी, अर्ली मिथेटिक, पूसा केंतकी आदि में से किसी एक का विचड्रि नेट श्रेड में ऊँची बीजस्थली बनाकर उगायें। बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राइकोगैमा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंटीमीटर रखकर 8 से 10 दिनों के पौधा की रोपाई करें।

सब्जी मटर उन्नत प्रभेद -आर्केल, काशी नन्दिनी, पी.एम-113, पूसा प्रगति एवं अजाद पी -1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंधित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचारित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंटीमीटर रख कर बुआई करें।

आलू उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुत्रगज (अगात), कुफरी कंचन, कुफरी पुत्रक एवं कुफरी लालिम (मधयज),कुफरी सिन्डुरी एवं कुफरी चिपखोल-1 (पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुआई के लिए चयन करें। बुआई के लिए 25 से 30किन्टल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुआई से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम या मेनकोजेब या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें। खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नवजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम मल्फरप्रति हेक्टेयर के दर से बुआई के समय डालें। नवजन की आधी मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई खुले कतार में डालें। फसल की पतियाँ टेढ़ी मेढ़ी होने पर कालडेन 50 एच पी अतः वचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तर्गत पर छिड़काव करें। 25 से 30 दिनों के फसल की निर्याद -गुड्राई कर 162 किलोग्राम यूरिया की वची मात्रा का मुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें।

प्याज उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार, एच 53, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा वाईट, पूसा माधवी, वयवई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलागी रेड की विचड्रि उगायें। विचड्रि उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा सिगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद विजस्थली में तापमान बनाये रखने हेतु जन्द अंकुरण होने तक पुआल से ढकें।

पपीता रिंग स्पट वायरस तथा मैजिक वायरस से वचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किसें पूसा डेवार्फ या इन्डिव्यू की रोपाई करें, रोपाई के लिए पौधों से पौधों के बीच की दूरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) x 60 (बीड़ाई) x 60 सेंटीमीटर (नहर) गड्ढा खोंदें। गड्ढा में खाद की मात्रा - सड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करज व नीम खाली 1 किलोग्राम,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाइलपराथियोन धुल 50 ग्राम खादें हुए मिट्टी में मिलाकर भर दें तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें।

गोजालि इस मौसम में गोजालि पर खुरहा एवं चक्का का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अतः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से वचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दें। दुग्ध की उत्पादन में बढ़ाव हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट.यू.पी.ओ-812,एच.ओ.एम-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर, अनुसंधित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉस्फेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमीटर में डालकर बुआई करें।

(राजू लिन्डा)

(डॉ. ए. वट्टद)

(डॉ.पी. वी.साहा)



GRAMIN KRISHI MAUSAM SEWA BIRSA AGRICULTURAL UNIVERSITY (ZONAL RESEARCH STATION, DARISAI)

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, दारिसाई को भारत मौसम विभाग, राँची द्वारा भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मन्त्रालय, नई दिल्ली, से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला पूर्वी सिंहभूम तथा उसके आसपास के क्षेत्रों के लिए अगले 120 घण्टों के दौरान मौसम पूर्वानुमान



Ref :13/2018/GKMS/Darisai(92)
Date: 13.11.2018
Web : bauranchi.org

**एवम्
मौसम खेती परामर्श बुलेटिन
अगले पाँच दिनों के लिए मौसम पूर्वानुमान (14-18 नवम्बर 2018)**

Ph No. -9334729740(m)
binodranchi@gmail.com

मौसम इकाई /दिनांक	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
बूझ (मिलीमीटर)	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.
अधिकतम तापमान (°C)	31	31	31	31	31
न्यूनतम तापमान (°C)	18	17	17	16	16
प्रकाश में बादल की स्थिति	छिट-पुट बादल	घने बादल	घुंघु	घुंघु	घुंघु
अधिकतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	89	85	89	89	88
न्यूनतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	36	31	28	30	27
हवा की गति (किलोमीटर प्रतिघंटा)	4	7	7	5	5
हवा बहाव की दिशा	पश्चिम-उत्तर से	पश्चिम से	पश्चिम से	पश्चिम से	दक्षिण-पूर्व से

उपरोक्त मौसम पूर्वानुमान पर आधारित किसान भाईयों के लिए कृषि सामयिक सलाह

संकेत- मौसम साफ रहने की पूर्ण सम्भावना है। सिंचाई दवा का छिड़काव एवम् खाद का भुरकाव कर सकते हैं। SPI value (1 to 0.49 मध्यम नमी) दिनांक 07.11.2018 तक के अनुसार मृदा में नमी बरकरा है। मृदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाम के लिए चना, तीसी, खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर सामान्य से 50 प्रतिशत ज्यादा लें यानी की सामान्य 1.5 गुना लें। दो- तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से ही सरसो मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी लें। अभी असिंचित गेहूँ मध्यम जमीन में धान कटाई के बाद या खली पड़े खेत में बुआई कर सकते हैं। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर ही उपयोग करें। NDVI value (.25 to 0.45) दिनांक 04.11.2018 तक के अनुसार रबी फसल की बहुत अच्छी एवम् बिना तनाव साथ ही साथ अच्छे फलव में है। NDVI value (.55 to 0.65) दिनांक 04.11.2018 तक के अनुसार मध्यम एवम् नीचली जमीन में धान परिपक्व होने एवम् प्रजनन अवस्था में है।

ऊपरी, मध्यम एवम् निचली जमीन खेती : ऊपरी जमीन में लिए गए कुल्थी, सरगुजा, लोधीया, राइस बिन एवम् कुसुम इत्यादी में निकाई-गुड़ाई के बाद हल्की सिंचाई करें। **मध्यम एवम् निचली जमीन** में बगिन क्षेत्रों में धान दुग्धा या दाना सकेत होने की अवस्था में है एवम् इसका सीधा प्रभाव उपज पर पड़ता है। अगले पाँचों दिन **आसमान साफ रहने की संभावना है।** इस अवस्था में गंधी बाग कीटों का प्रकोप बढ़ने की सम्भावना एवम् प्रकोप होने पर दाने बरदरंग होते दिखेंगे। अतः इसके रोक थाम हेतु मिथाइल पाराथियोस 2 प्रतिशत घुल या क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत या इमीडाक्लोप्रिड घुल 8-10 मिलीग्राम प्रति एकड़ के दर से सुबह के वक्त या शाम सूर्यास्त से पूर्व भुरकाव करें। अन्य सुझाव- दूध भरने एवम् दाने सकेत होने तक संवेदनशील अवस्था होती है। अतः धान की ज्य- में नमी नितांत आवश्यक है। इस अवस्था में नमी की कमी वाले खेत में आहर, नाहर, नदी, कुआँ इत्यादि या किसी भी जल स्रोत से कम से कम एक सिंचाई अवश्य कोशिश करें। वाली बनने की अवस्था में यूरिया का उपरिरोशन करें एवम् कीट-व्याधी के प्रति सजग रहें। धान में चूड़ों का प्रकोप हो, तो मेड़ों को पतला कर छेदों के समीप धनात्मक आकार का डंडा 20-25 संख्या प्रति एकड़ के हिसाब से लगा दें ताकि रात में उल्लू आकर बैठे।

ऊपरी- मध्यम जमीन (तीन 3):
हवा मटर : समय पर बोये गये मटर, लत्तर फलव के साथ-साथ फूल आने की अवस्था में है तथा मौसम में उतार-चढ़ाव के कारण चूर्णिल फफूँदी बीमारी के बढ़ जाने की आशंका है अतः निवारण हेतु कैपथेन 0.1(1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) या सल्फेक्स 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें।
आलू: पिछले पाँच दिन छिट-पुट बादलों से घीरा रहना एवम् आद्रता में इस के साथ ही साथ दिन एवम् राती के मृदा तथा वातावरण के तापमान में उतार-चढ़ाव होने से आलू के पौधों(बुआई के एक माह, शाकीय वृद्धि अवस्था) में अगेती तथा पिछेती अंगमारी से संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ जाती है। मौसम साफ होने पर इसकी तीव्रता और बढ़ जाती है। अतः बचाव हेतु 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। कहीं आलू पौधों के शाकीय वृद्धि अवस्था में पत्तियों के मुड़ जाने की स्थिति जान पड़े रही है। अतः बचाव हेतु बाजार में उपलब्ध केलडान 50 एस पी 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जो किसान भाई आगत आलू किस्म लगाए 20-25 दिनों के बाद भी मिट्टी नही चढ़ाएँ हों, तो मिट्टी चढ़ाने का कार्य पूरी कर लें।

जो किसान भाई आलू की उन्नत किस्म जैसे कुकुरी चन्द्रमुखी, कुकुरी अशोका, कुकुरी कोचन, कुकुरी पुरखार इत्यादि लेना चाहते हों, तो खेतों की तैयारी के वक्त गोबर की सड़ी खाद 10-15 टन प्रति एकड़ की दर से साथ ही साथ 260 किलोग्राम यूरिया + 560 किलोग्राम एस एस पी + 160 किलोग्राम एम ओ पी एवम् 10-12 किंगटल प्रति एकड़ बीज की आवश्यकता होती है। आलू को काट कर लगाने पर तीन स्वस्थ ऑख वाले टुकड़े को 3 ग्राम डायथेन एम 45 या 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से घोल में 20 मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर 24 घंटे के अंदर बुआई करें। समूचा आलू 30-40 ग्राम लगाना श्रेष्ठकर होता है। कतार से कतार 50 सेंटीमीटर एवम् कद से कद 15-20 सेंटीमीटर रखना चाहिए। उच हो जाये तो 50 सेंटीमीटर की दूरी में 5-6 सेंटीमीटर गहरी नाली बनायें। यूरिया की आधी मात्रा तथा एस एस पी की पूरी मात्रा बनाये गये नाली में डाल दें फिर गोबर की सड़ी खाद डालें। इसके ऊपर से समूचा आलू 20-40 ग्राम को डाल कर मिट्टी को चढ़ा दें। कंद बुआई के बाद खेत में जल का जमाव न होने दें।
चने : पौधों की खोटी कर हल्की सिंचाई के दो दिनों के उपरान्त 5 किलोग्राम यूरिया का भुरकाव करें। इससे शाखों की एवम् दानों की संख्या में वृद्धि होती है। सम्भव हो तो सिंचाई के साथ-साथ बुझा चूना का व्यवहार में लें। पीथियम जड़ एवम् बीज गलन बीमारी के लिए मेटालेक्सिल 1 मिलीली प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के दो-तीन दिनों के बाद एलाक्लोर 50 ई सी 800 मिलीली प्रति एकड़ के हिसाब से व्यवहार करें।

तोरी : वर्तमान तोरी फसल में (फूलावस्था) लाही कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें।
सरसो : लाही कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन या डायमथोएट 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें। सुबह के वक्त ज्यादा देर तक कुहासा बना रहने की स्थिति में चूर्णिल फफूँदी बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु सल्फेक्स 3 ग्राम या केराबेन 1 मिलीली प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। बुआई के 35-40 दिनों के बाद पत्तियों झुलस रहे हों तो बचाव हेतु कन्टाफ (हेक्साकोनाजोल) 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2. ग्राम या थयोफिनेट मिथाइल(रोको) या टॉपसिन 1 ग्राम शाम के वक्त दें।

रबी फसलों की बुआई से पहले बीजोत्पाचार हेतु सुझाव:
दो- तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से सरसो मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी लें। अभी असिंचित गेहूँ मध्यम जमीन में धान कटाई के बाद या खली पड़े खेत में बुआई कर सकते हैं। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर ही उपयोग करें। **मृदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाम के लिए चना, तीसी, खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर सामान्य से 50 प्रतिशत ज्यादा लेयानी की 1.5 गुना लें।**

गेहूँ- कार्बेन्डाजिम 60 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण बाजार में बेविस्टीन, डेरोसाल, हिटास्टीन धनुस्टीन आदि नाम से उपलब्ध है का 2 ग्राम या कार्बोसिन 75 प्रतिशत चूर्ण जो बीटावेक्स, बीटावेक्स पावर के नाम से प्रचलित है का 2 ग्राम या टेडुकोनाजोल (रैक्सिल) 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। बीज को मिट्टी के घड़े में भर कर थोड़ा भाग खाली रखें। बताये गये दवा में थोड़ा पानी मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को घड़े में डाल कर अच्छी तरह से मिला दें ताकि दवा की परत बीज पर अच्छी तरह से चढ़ जाए। इसे छाया में 6-8 घंटा सुखा कर ही बुआई करें।
चना, मटर, मसूर - बीजों से पूर्व कवकनाशी जैसे बेविस्टीन से 2 ग्राम प्रति किलो 3 ग्राम अथवा थीरम 3 ग्राम प्रति किलो 3 ग्राम बीज की दर से उपचारित कर लें। 24 घंटा बाद कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 20 ई सी से 5 मिलीलीटर प्रति किलो 3 ग्राम बीज की दर से उपचारित कर लें। कवक एवम् कीटनाशी रसायन से उपचारित बीज का 6-8 घंटा तक छाया में सुखने के बाद जैविक फफूँदनाशी ट्राइकोडरमा 5 ग्राम एवम् र्यूडोमोनस 10 ग्राम से उपचारित कर लें। कुछ घंटों के उपरान्त पीएसबी एवम् राईजोबियम(जीवाणु खाद) कल्चर से उपचारित कर ही खेतों में बुआई करें। आधा लीटर पानी में 100 ग्राम गूड़ को 15 मिनट तक गर्म कर ढंडा होने दें। 200 ग्राम राईजोबियम पैकेट को ढंडे घोल में मिला दें। तैयार मात्रा आधा एकड़ में बुआई हेतु बीज के लिए उपयोग करें।
सरसो, तोरी, राई, तीसी - बेविस्टीन 2 ग्राम या थीरम या कैपटान के 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर सूखने के पश्चात् बीज की बुआई करें।
आलू- इण्डोफिल एम 45, डायथेन एम 45 (मैकोजेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण) या रिडोमिल एम जेड 2-3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर आवश्यक मात्रा में आलू बीज को घोल में 30 मिनट तक डुबोये रखने के उपरान्त ही निकाल कर छाया में सूखाकर लगायें। बचे घोल को खेतों में छिड़क दें।
कीट से बचाव- दीमक, कटुआ एवम् कजरा पिल्लू जैसे कीटों से बचाव के लिए क्लोरपायरीफास 20 प्रतिशत तरल कीटनाशी जो बाजार में उर्सबान, रडार इत्यादि नामों से मिलता है का 5 मिलीली प्रति लीटर पानी से उपचारित करें।

गेंहूँ - नवम्बर माह के प्रथम सप्ताह तक बुआई के लिये उन्नत किस्म के 9107 एवम् एच यू डब्लू 234, 468, इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर ही व्यवहार में लें। 20 सेंटीमीटर की दूरी पर टोस कतार पर बुआई करें। उर्वरक हेतु 60: 25: 15 किलोग्राम एम : पी,ओ, : के,ओ प्रति एकड़ की दर से आवश्यकता होती है। एक लिहाई, 45 किलोग्राम यूरिया + चूरी फसफोरस एवम् पोटाश की मात्रा बुआई के वक्त डालें। दीमक से बचाव के लिये खेतों की तैयारी वक्त 10 किलोग्राम क्लोरपायरीफास 1.5 प्रतिशत घुल को अच्छी तरह से मिला लें। **गेंहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु** (सिर्फ क्राउन जड़ बने की अवस्था में ही : 20-25 दिनों पर) आइसोप्रोटुरॉन 75 प्रतिशत घुल 600 ग्राम एवम् 2 4 डी 300 ग्राम या सल्फोसलफूरान 75 प्रतिशत डब्लू पी 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से बुआई के 25-30 दिनों के अंदर 300-400 लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। **गेंहूँ के शाकीय अवस्था (कल्ले) में मौसम ठंड एवम् कुछ देर तक कुहासा रहने से पौधों के पत्ती झुलस रहे तो बचाव हेतु इण्डोफिल एम 45 का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।**

आहर-पीथे अभी फूल एवम् फली आने की अवस्था में है एवम् मौसम साफ के साथ-साथ दिन और रात के वातावरण के तापमान में ज्यादा अंतर होने से कीटों का प्रकोप होने की काफी सम्भावना है। अतः बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत का 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। बोरेक्स 4 कि०/एकड़ के दर से मिट्टी में पौधे के समीप डालें या 1-1.5 पी पी एम बोरेक्स पत्तियों पर छिड़काव करें। कीटों से बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत का 1.5 मिलीलीटर या मोनोकोटोफास 1 मिलीलीटर या इनडोक्साफॉल 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। प्रोफेनोफॉस 50 ई सी, मेथेथील 40 एस पी मोनोकोटोफास 36 एस एल लारवा की मार देता है पर पत्तों से जालीनुमा आवरण कीटनाशी के समर्थ में चली आ पाता है। अतः गैस बनने वाली दवा जैसे डीडीपीपी 0.5 मिलीली प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव करने से जालीनुमा आवरण से कीट बाहर निकल कीटनाशी के समर्थ में आकर प्रभावित हो जायेगा। मार्दस एवम् लाही के लिए डायमथोएट 30 इसी 2 मिलीली० और अकारिसाइड जैसे डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मिलीली०; ब्रिस्टर बीटल हेतु साईपरमिथिन 10 इसी 1 मिलीली० प्रति ली० पानी या लेन्डा साइलाथिन 5 इसी 1 मिलीली० प्रति ली० पानी; स्टेरीलिटी मोजाईक के लिए डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मिलीली० या ऑक्सीडेमेटान मिथाइल 25 इसी का 2 मिलीली० या डायमथोएट 30 इसी 2 मिलीली० प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव एक पंक्ति छोड़ कर 10 दिनों के अंतराल पर करें।

तीसी : पौधे अभी शाखा बनने एवम् वृद्धि हाने की अवस्था में है। 35(शाखा बनने एवम् वृद्धि) दिन होने पर सिंचाई हेतु प्रबंध करें। 20-45 दिन तक फसलों की प्रतियोगिता खरपतवारों से बनी रहती है। अतः नियंत्रण हेतु आइसोप्रोटुरॉन 75 डब्लू पी 400 ग्राम के साथ-साथ 2.4-डी (सोडियम नमक) 200 ग्राम बुआई के 30-35 दिनों के उपरान्त में लें तथा एक सप्ताह में कद हाथों के द्वारा सिंचाई कर लें। अभी के मौसम में अंगमारी एवम् चूर्णिल फफूँदी बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु आइसोप्रोटुरॉन 75 प्रतिशत डब्लू पी जिसका बाजार में तबल डोज के नाम से उपलब्ध है का 2 ग्राम प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के वक्त सप्ताहिक अंतराल पर दो बार करें। चूर्णिल फफूँदी बीमारी से बचाव हेतु ट्राईडेमॉर्फ 80 प्रतिशत ई सी (कैलिक्सीन) का 5 मिलीली० प्रति 10 ली० पानी या केराथेन 1 मिलीली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें।

● सब्जियों:-
सबजियों:-
मौसम की अनुकूलता के कारण बैंगन तथा मिण्डी में धड़ एवम् फली छेदक, पत्ती झुलसा एवम् पत्ती मुड़ण टमाटर एवम् मिर्च में और लाल मकड़ी लत्तर वाले बरसाती सब्जियों में होने की प्रबल सम्भावना है। पत्ती झुलसा टमाटर एवम् मिर्च में रिडोमिल एम जेड 1.5 मिलीलीटर तथा पत्ती मुड़ण में सुपार डी या न्युराल डी का 0.5 मिलीलीटर, लाल मकड़ी के प्रकोप से बचने के लिए डायकोफॉल या ओमाइट या इथियान 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है। अतः बचाव हेतु जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 1 मिलीलीटर प्रति 5 लीटर पानी या कुंगू फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में अगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों में 3 ग्राम इनडोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों में 3 ग्राम ब्लाइटॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।
टमाटर - स्वर्ण लाहिमा, अर्का आगा, आगत पत्तागोभी :- ग्राइड औफ इन्डिया, गोल्डेन एकर, अली ड्रम हेड, फूलगोभी :- पूसा केतकी, कुंआरी, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा शुभा एवम् बैंगन :- स्वर्ण प्रतिभा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण भगी । प्याज का बीचड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म- एम 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्गीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा व्हाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बन्बई सलेक्सन, पटना व्हाइट, बेलारी रेड इत्यादि का ही चयन करें।
4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंडाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी मुरगुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फूहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेविस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।
प्याज का बीचड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म- एम 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्गीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा व्हाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बन्बई सलेक्सन, पटना व्हाइट, बेलारी रेड इत्यादि का ही चयन करें।
4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंडाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी मुरगुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फूहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेविस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।
सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है। अतः बचाव हेतु जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी या आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 1 या कुंगू फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में अगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों में 3 ग्राम इनडोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों में 3 ग्राम ब्लाइटॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

फलदार पौधों को लगाने का अनुकूल मौसम है। इस क्षेत्र के फलों के निम्नलिखित किस्मों को लें:-
शरीफा- अर्का साहन केला- बेहुला, रोबटरा, जी-9 **पपीता-** पूसा डेलीसीयस, पूसा डवारफ, कुर्ग हनि ड्यू, पूसा नन्दा एवम् अमरुद :-अलाहाबाद सफेदा, लखनऊ 49, अर्का मुदुला, ललीत, अर्का अमृत्यु **सबजियों :** सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में गिरावट होने से कीटों का प्रकोप बढ़ गया है। अतः जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी या इन्डोसलफूरान 4 प्रतिशत घुल 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 1 ग्राम या कुंगू फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में झुलसा एवम् म्लानी रोग से ग्रसित खेतों में बीम रसायन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। मावी मौसम को देखते हुये चूड़ों पर मोनोकोटोफास 1 मिलीलीटर या मिथाइल डिमेटान। मिलीलीटर या इमिडाक्लोप्रिड 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

पशुओं के लिए सुझाव - मवेशियों को रात में ढंड से बचाव हेतु घर में रखें। फर्श को प्रत्येक दिन सूखा रखें। खुर पका-मुँहा फाड़, हेमोरेजिक सेप्टिसीमिया, ब्लेक क्वार्टर एवम् एन्टरोसेसिमिया बीमारी से बचाव हेतु इस महिने में टीकाकरण करें। थनेल बीमारी से बचाव हेतु विशेष ध्यान दें। बाहर परजीवी से बचाव के लिए शरीर पर दवा का धोना लगाएँ। जरूरत के हिसाब से लवण एवम् मिनरल मिक्सचर को मुख्य भोजन में मिला कर दें। ढंड में चारा के आभाव से बचने के लिए चारा का भंडारण करें। चारा फसल हेतु बरसीम को मध्य माह तक एवम् जौ की उन्नत किस्म जैसे - लिरसा ओट 6 एवम् 9, जे एच ओ 822 एवम् 851 इस माह के अंत तक बुआई समाप्त कर लें। इस माह बकरियों एवम् भेड़ों को प्रत्येक तिसरे साल पी पी आर से बचाव हेतु टीकाकरण करें। बाइयपरजीवी से बचाव हेतु भेड़ों को कतरनी के 21 दिनों के बाद संक्रमण से बचाव के लिए निस्सक्रामक दवा का घोल से नहलाएँ।
बायल्यूफोर्मा, गुणितान - यदि चूजे बूढ़ के नीचे बल्ब के नजदिक एक साथ हो जाये तो समझना चाहिए की बूढ़ में तापमान कम है। तापमान बढ़ाने के लिए अतिरिक्त बल्ब का इन्तजाप करें या जो बल्ब बूढ़र में लगा है, उसको थोड़ा नीचे कर दें। यदि चूजे बल्ब से काफी दूर किनारे में जाकर जमा हो तो समझना चाहिये कि बूढ़ में तापमान ज्यादा है। ऐसी स्थिति में तापमान कम करें। इसके लिए बल्ब को ऊपर खींचें या बल्ब की संख्या या पावर को कम करें। अतः चूजों पर ध्यान रखें, समझकर तापमान नियंत्रित करें।
मछली पालन - वातावरण के तापमान में कमी के साथ-साथ पानी के तापमान में भी कमी होने के कारण तालाब में अधीक संख्या में मछली होने के चलते बहुत ही अधिक घातक एवम् संक्रामक बीमारी लाल धब्बा(ई०यू०एस०) होने की सम्भावना अधिक होने के साथ ही साथ देखे भी जा रहे हैं। अतः बचाव हेतु 1 लीटर एक्वानीम 10 एक्स 100 लीटर पानी में घोल बनाकर तालाब के सभी स्थान पर सामान मात्रा में छिड़काव करें। इसके छिड़काव से पानी की कठोरता में बढ़त के साथ-साथ मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा में बढ़त हो जाती है। जिसके चलते मछली उत्पादन बढ़ जाता है।

बिनोद कुमार
तकनीकी अधिकारी

प्रदीप प्रसाद
सह निदेशक



GRAMIN MAUSAM SEWA BIRSA AGRICULTURAL UNIVERSITY (ZONAL RESEARCH STATION, DARISAI)

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, दारिसाई को भारत मौसम विभाग, राँची द्वारा भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मन्त्रालय, नई दिल्ली, से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला सरायकेला तथा उसके आसपास के क्षेत्रों के लिए अगले 120 घण्टों के दौरान मौसम पूर्वानुमान

एवम्
मौसम खेती परामर्श बुलेटिन

अगले पाँच दिनों के लिए मौसम पूर्वानुमान (14-18 नवम्बर 2018)



Ph No. -9334729740(m)
binodranchi@gmail.com

Ref : 13/2018/GKMS/ Darisai(92)
Date: 13.11.2018
Web : bauranchi.org

मौसम इकाई / दिनांक	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
बर्फा (मिलीमीटर)	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.
अधिकतम तापमान (°C)	31	31	31	31	31
न्यूनतम तापमान (°C)	18	17	17	16	16
आकाश में बादल की स्थिति	छिट-पुट बादल	घने बादल	घुप	घुप	घुप
अधिकतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	89	85	89	89	88
न्यूनतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	36	31	28	30	27
हवा की गति (किलोमीटर प्रतिघंटा)	4	7	7	5	5
हवा की दिशा	पश्चिम-उत्तर से	पश्चिम से	पश्चिम से	पश्चिम से	दक्षिण-पूर्व से

उपर्युक्त मौसम पूर्वानुमान पर आधारित किसान भाईयों के लिए कृषि सामयिक सलाह

संकेत- मौसम साफ रहने की पूर्ण सम्भावना है। सिंचाई देना का छिड़काव एवम् खाद का मुरकाव एवम् खाद का मुरकाव 07.11.2018 तक के अनुसार मुदा में नमी बरकरा है। मुदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाभ के लिए चना, तीसी, खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर समान्य से 50 प्रतिशत ज्यादा लें यानी की सामान्य 1.5 गुना लें। दो- तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से ही सरसो मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी ले। अभी असिंचित गेहूँ मध्यम जमीन में धान कटाई के बाद या खली पड़े खेत में बुआई कर सके हैं। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर ही उपयोग करें। NDMI value (0.25 to 0.45) दिनांक 04.11.2018 तक के अनुसार रबी फसल की बढत अच्छी एवम् बिना तनाव साथ ही साथ अच्छे फलवार में है। NDMI value (.55 to 0.65) दिनांक 04.11.2018 तक के अनुसार मध्यम एवम् नीचली जमीन में धान परिपक्व होने एवम् प्रजनन अवस्था में है।

ऊपरी, मध्यम एवम् निचली जमीन खेती: ऊपरी जमीन में लिए गए कुल्थी, सरगुजा, लोबीया, राइस बिन एवम् कुसुम इत्यादी में निकाई-गुड़ाई के बाद हल्की सिंचाई करें। **मध्यम एवम् निचली जमीन** में बिनन क्षेत्रों में धान दुग्धा या दाने सक्त होने की अवस्था में है एवम् इसका सीधा प्रभाव सरसो मटर पर पड़ता है। अगले पाँचों दिन **आसमान साफ रहने** की संभावना है। इस अवस्था में गंधी बग कीटों का प्रकोप बढ़ने की सम्भावना एवम् प्रकोप होने पर दाने बदरंग होते दिखेंगे। अतः इसके रोक थाम हेतु मिथाइल पाराथोथीयन 2 प्रतिशत घुल या क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत या इमीडाक्लोप्रिड घुल 8-10 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से सुबह के वक्त या शाम सूर्यास्त से पूर्व मुरकाव करें। **अन्य सुझाव-** दूध भरने एवम् दाने सक्त होने तक संवेदनशील अवस्था होती है। अतः धान की जड़, नमी नितांत आवश्यक है। इस अवस्था में नमी की कमी वाले खेत में आहर, नाहर, नदी, कुआँ इत्यादि या किसी भी जल स्रोत से कम से कम एक सिंचाई अवश्य कोशिश करें। बाली बनने की अवस्था में यूरिया का उपरिपेक्षा करें एवम् कीट-व्याधी के प्रति सजग रहें। धान में बूढ़ों का प्रकोप हो, तो मेंढों को पतला कर छेदों के समीप धनात्मक आकार का डंडा 20-25 संख्या प्रति एकड़ के हिसाब से लगा दें ताकि रात में उल्लू आकर बैठे।

ऊपरी- मध्यम जमीन (दाने 3):
हवा मटर: समय पर बोये गये मटर, लत्तूर फलवार के साथ-साथ फूल आने की अवस्था में है तथा मौसम में उतार-चढ़ाव के कारण चूर्णिल फफूँटी बीमारी के बढ़ जाने की आशंका है अतः निवारण हेतु कैराथेन 0.1 (1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) या सल्फेक्स 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें।
आलू: पिछले पाँच दिन छिट-पुट बादलों से घेरा रहना एवम् आद्रता में झर के साथ ही साथ दिन एवम् रातों के मुदा तथा वातावरण के तापमान में उतार-चढ़ाव होने से आलू के पौधों(बुआई के एक माह, शाकीय वृद्धि अवस्था) में अंगेती तथा पिछेती अंगमारी से संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ जाती है। मौसम साफ होने पर इसकी तीव्रता और बढ़ जाती है। अतः बचाव हेतु 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। कहीं आलू पौधों के शाकीय वृद्धि अवस्था में पत्तियों के मुड़ जाने की स्थिति जान पड़ रही है। अतः बचाव हेतु बाजार में उपलब्ध केलडान 50 एम पी 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जो किसान भाई आगत आलू किस्म लगाए 20-25 दिनों के बाद भी मिट्टी नहीं चढ़ाएँ हों, तो मिट्टी चढ़ाने का कार्य पूरी कर लें।

जो किसान भाई आलू की उन्नत किस्म जैसे कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी कंचन, कुफरी पुरखार इत्यादि लेना चाहते हों, तो खेतों की तैयारी के वक्त गोबर की सड़ी खाद 10-15 टन प्रति एकड़ की दर से साथ ही साथ 260 किलोग्राम यूरिया + 560 किलोग्राम एस एस पी + 160 किलोग्राम एम ओ पी एवम् 10-12 विबटल प्रति एकड़ बीज की आवश्यकता होती है। आलू को काट कर लगाने पर तीन स्वस्थ ऑख वाले टुकड़े को 3 ग्राम डायथेन एम 45 या 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से घोल में 20 मिन्ट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर 24 घंटे के अंदर बुआई करें। समूचा आलू 30-40 ग्राम लगाना श्रेष्ठकर होता है। कतार से कतार 50 सेंटीमीटर एवम् कंद से कंद 15-20 सेंटीमीटर रखना चाहिए। उब हो द्वारा खेतों में 50 सेंटीमीटर की दूरी में 6-6 सेंटीमीटर गहरी नाली बनायें। यूरिया की आधी मात्रा तथा एस एस पी एवम् एम ओ पी की पूरी मात्रा बनाये गये नाली में डाल दें फिर गोबर की सड़ी खाद डालें। इसके ऊपर से समूचा आलू 20-40 ग्राम को डाल कर मिट्टी को चढ़ा दें। कंद बुआई के बाद खेत में जल का जमाव न होने दें।

घने: पौधों की खोटनी कर हल्की सिंचाई के दो दिनों के उपरान्त 5 किलोग्राम यूरिया का मुरकाव करें। इससे शाखाओं की एवम् दानों की संख्या में वृद्धि होती है। सम्भव हो तो सिंचाई के साथ-साथ बुझा चूना का व्यवहार करें। पौधियम जड़ एवम् बीज गलन बीमारी के लिए मेटालेक्सिल 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के दो-तीन दिनों के बाद एलाक्लो 50 ई सी 800 मि०ली० प्रति एकड़ के हिसाब से व्यवहार करें।

तोरी: वर्तमान तोरी फसल में (फूलवस्था) लाठी कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें।
सरसो: लाठी कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन या डायमेथोएट 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें। सुबह के वक्त ज्यादा देर तक कुहासा बना रहने की स्थिति में चूर्णिल फफूँड बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु सल्फेक्स 3 ग्राम या कैराथेन 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। बुआई के 35-40 दिनों के बाद पत्तियों झुलस रहें हों तो बचाव हेतु कन्टाफ (हेक्साक्लोजोले) 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2. ग्राम या थयोफिनेट मिथाइल(रोको) या टॉपसिन 1 ग्राम शाम के वक्त दें।

रबी फसलों की बुआई से पहले बीजोद्योग हेतु सुझाव:
कारबेंडाजिम 560 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण बाजार में बेवैस्टीन, डेरॉसाल, हिटास्टीन धनुस्टीन आदि नाम से उपलब्ध है का 2 ग्राम या कार्बोक्सीन 75 प्रतिशत चूर्ण जो बीटावेक्स, बीटावेक्स पावर के नाम से प्रचलित है का 2 ग्राम या टेबुकोनाजोल (रैक्सिल) 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। बीज को मिट्टी के घड़े में भर कर थोड़ा भाग खाली रखें। बताये गये दवा में थोड़ा पानी मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को घड़े में डाल कर अच्छी तरह से मिला लें ताकि दवा की परत बीज पर अच्छी तरह से चढ़ जाए। इसे छाया में 6-8 घंटा सुखा कर ही बुआई करें।

चना, मटर, मसुर - बीजों को बुआई से पूर्व क्वान्थाई जैसे बेवैस्टीन से 2 ग्राम प्रति कि० ग्रा० अथवा थीरम 3 ग्राम प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से उपचारित कर लें। 24 घंटा बाद कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 20 ई सी से 5 मिलीलीटर प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से उपचारित कर लें। क्वक एवम् कीटनाशी रसायन से उपचारित बीज का 6-8 घंटा तक छाया में सुखने के बाद जैविक फफूँदनाशी ट्राइकोडरमा 5 ग्राम एवम् स्पूडोमोनास 10 ग्राम से उपचारित कर लें। कुछ घंटों के उपरान्त पीएसबी एवम् राईजोबियम(जीवाणु खाद) कल्चर से उपचारित कर ही खेतों में बुआई करें। आधा लीटर पानी में 100 ग्राम गुड़ को 15 मिन्ट तक गर्म कर ढंडा होने दें। 200 ग्राम राईजोबियम पैकेट को ढंडे घोल में मिला दें। तैयार मात्रा आधा एकड़ में बुआई हेतु बीज के लिए उपयुक्त है।

सरसो, तोरी, राई, त्रीसी - बेवैस्टीन 2 ग्राम या थीरम या कैप्टान के 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर सुखने के पश्चात् बीज की बुआई करें।
आलू - इण्डोफिल एम 45, डायथेन एम 45 (मैकोजेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण) या रिडोमिल एम जेड 2-3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर आवश्यक मात्रा में आलू बीज को घोल में 30 मिन्ट तक बुझोये रखने के उपरान्त ही निकाल कर छाया में सुखाकर लगायें। बचे धोले को खेतों में छिड़क दें।
कीट से बचाव - दीमक, कटुआ एवम् कजरा पिल्लू जैसे कीटों से बचाव के लिए क्लोरपायरीफास 20 प्रतिशत तरल कीटनाशी जो बाजार में उर्डबॉन, रडार इत्यादि नामों से मिलता है का 5 मि०ली० प्रति लीटर पानी से उपचारित करें।

गेंद - नवंबर माह के प्रथम सप्ताह तक - इस माह गेंदों की बुआई, कल्ले निकलने एवम् मूकट जड़ बनने की अवस्था में है। दोनों ही अवस्था में सिंचाई के बाद मिट्टी मुरमुरी कर घास पत निकालने के बाद नाइट्रोजन की एक चौथाई, 10-12.5 किलोग्राम (22-27 किलोग्राम यूरिया) प्रति एकड़ के हिसाब से उपरिपेक्षा करें।
दिसम्बर माह के द्वितीय सप्ताह तक बुआई के लिये उन्नत किस्म के 9107 एवम् एच यू डब्लू 234, 468, इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर ही व्यवहार में लें। 20 सेंटीमीटर की दूरी पर दोस कतार पर बुआई करें। उर्वरक हेतु 60: 25: 15 किलोग्राम एम पी, ओ, के, ओ प्रति एकड़ की दर से आवश्यकता होती है। एक तिहाई, 45 किलोग्राम यूरिया + पूरी फसफोरस एवम् पोटाश की मात्रा बुआई के वक्त डालें। दीमक से बचाव के लिये खेतों की तैयारी वक्त 10 किलोग्राम क्लोरपायरीफास 1.5 प्रतिशत घुल को अच्छी तरह से मिला लें। अतः गेंस बनने वाली दवा जैसे डीडीपीपी 0.5 मि०ली० प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव करने से जालीनुमा आवरण से कीट बाहर निकल कीटनाशी के समर्थक में आकर प्रभावि हो जायेगा। माईरस एवम् लाठी के लिए डायमेथोएट 30 इसी 2 मि०ली० और अकारिसाईड जैसे डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मि०ली०; ब्रिस्टल बीटल हेतु साईपरथ्रिन 10 इसी 1 मि०ली० प्रति ली० पानी या लेन्डा साइलाथिन 5 इसी 1 मि०ली० प्रति ली० पानी; स्टेरीलिटी मोजाईक के लिए डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मि०ली० या ऑक्सीडेमोटान मिथाईल 25 इसी का 2 मि०ली० या डायमेथोएट 30 इसी 2 मि०ली० प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव एक पवित्र छोड़ कर 10 दिनों के अंतराल पर करें।

अच्छे-पिछे अभी फूल एवम् फली आने की अवस्था में है एवम् मौसम साफ के साथ-साथ दिन और रात के वातावरण के तापमान में ज्यादा अंतर होने से कीटों का प्रकोप होने की काफी सम्भावना है। अतः बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत का 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। बोरेक्स 4 कि०एकड़ के दर से मिट्टी में पौधे के समीप डालें या 1-1.5 पी पी एम बोरेक्स पत्तियों पर छिड़काव करें। कीटों से बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत का 1.5 मिलीलीटर या मोनोकोटोफास 1 मिलीलीटर या इनडोक्सावॉल 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। प्रोफेनोफॉस 50 ई सी, मेथेमील 40 एस पी मोनोकोटोफॉस 36 एस एल लारवा को मार देता है पर पत्तों से जालीनुमा आवरण कीटनाशी के समर्थक में नहीं आ पाता है। अतः गेंस बनने वाली दवा जैसे डीडीपीपी 0.5 मि०ली० प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव करने से जालीनुमा आवरण से कीट बाहर निकल कीटनाशी के समर्थक में आकर प्रभावि हो जायेगा। माईरस एवम् लाठी के लिए डायमेथोएट 30 इसी 2 मि०ली० और अकारिसाईड जैसे डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मि०ली०; ब्रिस्टल बीटल हेतु साईपरथ्रिन 10 इसी 1 मि०ली० प्रति ली० पानी या लेन्डा साइलाथिन 5 इसी 1 मि०ली० प्रति ली० पानी; स्टेरीलिटी मोजाईक के लिए डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मि०ली० या ऑक्सीडेमोटान मिथाईल 25 इसी का 2 मि०ली० या डायमेथोएट 30 इसी 2 मि०ली० प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव एक पवित्र छोड़ कर 10 दिनों के अंतराल पर करें।

तीसी: पौधे अभी शाखा बनने एवम् वृद्धि होने की अवस्था में है। 35(शाखा बनने एवम् वृद्धि) दिन होने पर सिंचाई हेतु प्रबन्ध करें। 20-45 दिन तक फसलों की प्रतियोगिता खरपतवारों से बनी रहती है। अतः नियंत्रण हेतु आइसोप्रोटूरॉन 75 डब्लू पी 400 ग्राम के साथ-साथ 2,4-डी (सोडियम नमक) 200 ग्राम बुआई के 30-35 दिनों के बीच व्यवहार में लें तथा एक सप्ताह में हल बाधों के द्वारा निकाई कर लें। अभी के मौसम में अंगमारी एवम् चूर्णिल फफूँड बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु आइसोप्रोटूरॉन 25 प्रतिशत डब्लू पी का कार्बेन्डाजिम 560 प्रतिशत डब्लू पी जिसका बाजार नाम डलब डोज के नाम से उपलब्ध है का 2 ग्राम प्रति ली० में तैयार घोल का छिड़काव शाम के वक्त सप्ताहिक अंतराल पर दो बार करें। चूर्णिल फफूँड बीमारी से बचाव हेतु ट्राईडेमॉर्फ 80 प्रतिशत ई सी (केल्वीसन) का 5 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें।

सबिजियों- सखियाँ-
मौसम की अनुकूलता के कारण बैंगन तथा मिण्ड्री में धड़ एवम् फली छेदक, पत्ती झुलसा एवम् पत्ती मुड़ण टमाटर एवम् मिर्च में और लाल मकड़ी लत्तर वाले बरसाती सब्जियों में होने की प्रबल सम्भावना है। पत्ती झुलसा टमाटर एवम् मिर्च में रिडोमिल एम जेड 1.5 मिलीलीटर तथा पत्ती मुड़ण में सुपार डी या न्युराल डी का 0.5 मिलीलीटर, लाल मकड़ी के प्रकोप से बचने के लिए डायकोफाल या ओमाइट या इथिन 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है। अतः बचाव हेतु जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 1 मिलीलीटर प्रति 5 लीटर पानी या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

टमाटर में अंगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों में 3 ग्राम इनडोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों में 3 ग्राम ब्लाइटॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।
टमाटर - स्वर्ण लालिमा, अर्का आमा, **अगात पत्तागोभी -** प्राईड ह्यू इन्डिया, गोल्डेन एवम्, **फूलगोभी -** पूसा केंकनी, कुंआरी, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा सुभ्रा एवम् **बैंगन -** स्वर्ण प्रतिमा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण मणी।
प्याज का बीजड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म- एम 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एपीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा ड्वाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बन्वाई सलेक्सन, पटना ड्वाइट, बेलाही रेड इत्यादि का ही चयन करें।

4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंदाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी थर्मुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फुहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेमिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

हाने का बीजड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म- एम 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एपीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा ड्वाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बन्वाई सलेक्सन, पटना ड्वाइट, बेलाही रेड इत्यादि का ही चयन करें। 4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंदाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी थर्मुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फुहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेमिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

टमाटर - स्वर्ण लालिमा, अर्का आमा, **अगात पत्तागोभी -** प्राईड ह्यू इन्डिया, गोल्डेन एवम्, **फूलगोभी -** पूसा केंकनी, कुंआरी, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा सुभ्रा एवम् **बैंगन -** स्वर्ण प्रतिमा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण मणी।
प्याज का बीजड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म- एम 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एपीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा ड्वाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बन्वाई सलेक्सन, पटना ड्वाइट, बेलाही रेड इत्यादि का ही चयन करें।

4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंदाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी थर्मुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फुहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेमिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

टमाटर - स्वर्ण लालिमा, अर्का आमा, **अगात पत्तागोभी -** प्राईड ह्यू इन्डिया, गोल्डेन एवम्, **फूलगोभी -** पूसा केंकनी, कुंआरी, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा सुभ्रा एवम् **बैंगन -** स्वर्ण प्रतिमा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण मणी।
प्याज का बीजड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म- एम 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एपीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा ड्वाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बन्वाई सलेक्सन, पटना ड्वाइट, बेलाही रेड इत्यादि का ही चयन करें।

4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंदाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी थर्मुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फुहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेमिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

टमाटर - स्वर्ण लालिमा, अर्का आमा, **अगात पत्तागोभी -** प्राईड ह्यू इन्डिया, गोल्डेन एवम्, **फूलगोभी -** पूसा केंकनी, कुंआरी, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा सुभ्रा एवम् **बैंगन -** स्वर्ण प्रतिमा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण मणी।
प्याज का बीजड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म- एम 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एपीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा ड्वाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बन्वाई सलेक्सन, पटना ड्वाइट, बेलाही रेड इत्यादि का ही चयन करें।

4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंदाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी थर्मुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फुहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेमिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

टमाटर - स्वर्ण लालिमा, अर्का आमा, **अगात पत्तागोभी -** प्राईड ह्यू इन्डिया, गोल्डेन एवम्, **फूलगोभी -** पूसा केंकनी, कुंआरी, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा सुभ्रा एवम् **बैंगन -** स्वर्ण प्रतिमा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण मणी।
प्याज का बीजड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म- एम 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एपीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा ड्वाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बन्वाई सलेक्सन, पटना ड्वाइट, बेलाही रेड इत्यादि का ही चयन करें।

4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंदाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी थर्मुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फुहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेमिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

टमाटर - स्वर्ण लालिमा, अर्का आमा, **अगात पत्तागोभी -** प्राईड ह्यू इन्डिया, गोल्डेन एवम्, **फूलगोभी -** पूसा केंकनी, कुंआरी, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा सुभ्रा एवम् **बैंगन -** स्वर्ण प्रतिमा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण मणी।
प्याज का बीजड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म- एम 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एपीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा ड्वाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बन्वाई सलेक्सन, पटना ड्वाइट, बेलाही रेड इत्यादि का ही चयन करें।

4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंदाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी थर्मुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फुहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेमिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

मौसम आधारित कृषि सलाह

प्रदीप प्रसाद
सह निदेशक

बिनादे कुमारी
तकनीकी प्रदायिका



GRAMIN KRISHI VISHWAVIDYALAYA BIRSA AGRICULTURAL UNIVERSITY (ZONAL RESEARCH STATION, DARISAI)



बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, दारिसाई को भारत मौसम विभाग, राँची द्वारा भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मन्त्रालय, नई दिल्ली, से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला पश्चिमी सिंहभूम तथा उसके आसपास के क्षेत्रों के लिए अगले 120 घण्टों के दौरान मौसम पूर्वानुमान

एवम्
मौसम खेती परामर्श बुलेटिन

अगले पाँच दिनों के लिए मौसम पूर्वानुमान (14-18 नवम्बर 2018)

Ref : 13/2018/GKMS/ Darisai(92)
Date:13.11.2018
Web : bauranchi.org

Ph No. -933429740(m)
binodranchi@gmail.com

मौसम इकाई/दिनांक	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षा (मिलीमीटर)	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.
अधिकतम तापमान (°C)	26	28	28	28	28
न्यूनतम तापमान (°C)	16	17	16	16	15
अंधकार में बदल की स्थिति	छिट-पुट बादल	घने बादल	धूप	धूप	धूप
अधिकतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	67	64	60	57	53
न्यूनतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	35	30	29	32	27
हवा की गति (किलोमीटर प्रतिघंटा)	2	4	3	3	3
हवा की दिशा	दक्षिण-पश्चिम से	दक्षिण-पश्चिम से	दक्षिण-पश्चिम से	दक्षिण-पश्चिम से	पूर्व से

उपरोक्त मौसम पूर्वानुमान पर आधारित किसान भाईयों के लिए कृषि सामयिक सलाह

संकेत - मौसम साफ रहने की पूर्ण सम्भावना है। सिंचाई दवा का छिड़काव एवम् खाद का भुरकाव कर सकते हैं। SPI value (0 to 0.99 हल्का नमी) दिनांक 07.11.2018 तक के अनुसार मृदा में नमी बरकरा है। मृदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाम के लिए चना, तीसी, खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर समान्य से 50 प्रतिशत ज्यादा लें यानी की समान्य 1.5 गुना लें। दो- तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से ही सरसो मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी ले। अभी असिंचित गेहूँ मध्यम जमीन में धान कटाई के बाद या खली पड़े खेत में बुआई कर सकते हैं। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर ही उपयोग करें। NDVI value (.25 to 0.45) दिनांक 04.11.2018 तक के अनुसार रबी फसल की बढ़त अच्छी एवम् बिना तनाव साथ ही साथ अच्छे फलान में है। NDVI value (.55 to 0.65) दिनांक 04.11.2018 तक के अनुसार मध्यम एवम् नीचली जमीन में धान परिपक्व होने एवम् प्रजनन अवस्था में है।

ऊपरी, मध्यम एवम् निचली जमीन खेती : ऊपरी जमीन में लिए गए कुल्थी, सरगुजा, लोबीया, राइस बिन एवम् कुसुम इत्यादी में निचाई-गुड़ाई के बाद हल्की सिंचाई करें। **मध्यम एवम् निचली जमीन** में बगिचा क्षेत्रों में धान दुग्धा या दाने सक्त होने की अवस्था में है एवम् इसका सीधा प्रभाव उपज पर पड़ता है। अगले पाँचों दिन आसमान साफ रहने की संभावना है। इस अवस्था में गंधी बग कीटों का प्रकोप बढ़ने की सम्भावना एवम् प्रकोप होने पर दाने बदरंग होते दिखेंगे। अतः इसके रोक थाम हेतु मिथाइल पाराथीयॉन 2 प्रतिशत घूल या क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत या इमीडाक्लोप्रिपिल घूल 8-10 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से सुबह के वक्त या शाम सूर्यास्त से पूर्व भुरकाव करें। अन्य सुझाव - दूध भरने एवम् दाने सक्त होने तक संवेदनशील अवस्था होती है। अतः धान की जड़ में नमी नितान्त आवश्यक है। इस अवस्था में नमी की कमी वाले खेत में आहर, नाहर, नदी, कुआँ इत्यादि या किसी भी जल स्रोत से कम से कम एक सिंचाई अवश्य कोशिश करें। बाली बनने की अवस्था में यूरिया का उपरिपेक्षण करें एवम् कीट-व्याधी के प्रति सजग रहें। धान में चूड़ों का प्रकोप हो, तो मेंढों को पतला कर छेदों के समीप धनात्सक आकार का डंडा 20-25 संख्या प्रति एकड़ के हिसाब से लगा दें ताकि रात में उल्लू आकर बैठे।

ऊपरी- मध्यम जमीन(लेन 3):

हवा मटर : समय पर बोये गये मटर, लत्तार फलान के साथ-साथ फूल आने की अवस्था में है तथा मौसम में उतार-चढ़ाव के कारण चूर्णिल फफूँदी बीमारी के बढ़ जाने की आशंका है अतः निवारण हेतु कैराथेन 0.1(1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) या सल्फेक्स 0.3 प्रतिशत (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें।

आलू: पिछले पाँच दिन छिट-पुट बादलों से घीरा रहना एवम् आद्रता में झर के साथ ही साथ दिन एवम् राती के मृदा तथा वातावरण के तापमान में उतार-चढ़ाव होने से आलू के पौधों(बुआई के एक माह, शाकीय वृद्धि अवस्था) में अंगेती तथा पिछेती अंगमारी से संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ जाती है। मौसम साफ होने पर इसकी तीव्रता और बढ़ जाती है। अतः बचाव हेतु 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। कहीं आलू पौधों के शाकीय वृद्धि अवस्था में पत्तियों के मुड़ जाने की स्थिति जान पड़ रही है। अतः बचाव हेतु बाजार में उपलब्ध केलडान 50 एस पी 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जो किसान भाई आगत आलू किस्म लगाए 20-25 दिनों के बाद भी मिट्टी नहीं चढ़ाएँ हों, तो मिट्टी चढ़ाने का कार्य पूरी कर लें।

जो किसान भाई आलू की उन्नत किस्म जैसे कुकुरी चन्द्रमुखी, कुकुरी अशोका, कुकुरी कंचन, कुकुरी पुखराज इत्यादि लेना चाहते हों, तो खेतों की तैयारी के वक्त गोबर की सड़ी खाद 10-15 टन प्रति एकड़ की दर से साथ ही साथ 260 किलोग्राम यूरिया + 560 किलोग्राम एस एस पी + 160 किलोग्राम एम ओ पी एवम् 10-12 फिफटल प्रति एकड़ बीज की आवश्यकता होती है। आलू को काट कर लगाने पर तीन स्वस्थ आँख वाले टुकड़े को 3 ग्राम डायथेन एम 45 या 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से घोल में 20 मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर 24 घंटे के अंदर बुआई करें। समूचा आलू 30-40 ग्राम लगाना श्रेष्ठकर होता है। कतार से कतार 50 सेंटीमीटर एवम् कंद से कंद 15-20 सेंटीमीटर रखना चाहिए। डच हो द्वारा खेतों में 50 सेंटीमीटर की दूरी में 5-6 सेंटीमीटर गहरी गाली बनायें। यूरिया की आधी मात्रा तथा एस एस पी एवम् ओ पी की पूरी मात्रा बनाये गये गाली में डाल दें फिर गोबर की सड़ी खाद डालें। इसके ऊपर से समूचा आलू 20-40 ग्राम को डाल कर मिट्टी को चढ़ा दें। कंद बुआई के बाद खेत में जल का जमाव न होने दें।

चने : पौधों की खोदनी कर हल्की सिंचाई के दो दिनों के उपरांत 5 किलोग्राम यूरिया का भुरकाव करें। इससे शाखों की एवम् दानों की संख्या में वृद्धि होती है। सम्भव हो तो सिंचाई के साथ-साथ बुड़ा चूना का व्यवहार में लें। पीथियम जड़ एवम् बीज गलन बीमारी के लिए मेटालेक्सिल 1 मिलीली प्रति प्रति लीटो पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के दो-तीन दिनों के बाद एलाक्लोर 50 ई सी 800 मिलीली प्रति एकड़ के हिसाब से व्यवहार करें।

तोरी : वर्तमान तोरी फसल में (फूलवस्था) लाठी कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें।

सरसों: लाठी कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन या डायमेथोएट 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें। सुबह के वक्त ज्यादा देर तक कुहासा बना रहने की स्थिति में चूर्णिल फफूँद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु सल्फेक्स 3 ग्राम या कैराथेन 1 मिलीली प्रति प्रति लीटो पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। बुआई के 35-40 दिनों के बाद पत्तियों झुलस रहें हों तो बचाव हेतु कन्टाफ (हेक्साकोनाजोल) 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2. ग्राम या थियोफिनेट मिथाइल(रेको) या टॉपरिन 1 ग्राम शाम के वक्त दें।

रबी फसलों की बुआई से पहले बीजोपचार हेतु सुझाव

दो- तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से सरसो मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी ले। अभी असिंचित गेहूँ मध्यम जमीन में धान कटाई के बाद या खली पड़े खेत में बुआई कर सकते हैं। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर ही उपयोग करें। **मृदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाम के लिए चना, तीसी, खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर सामान्य से 50 प्रतिशत ज्यादा लें यानी की 1.5 गुना लें।**

गेहूँ - कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण बाजार में बेविस्टीन, डेरोंसाल, हिटास्टीन धनुस्टीन आदि नाम से उपलब्ध है का 2 ग्राम या कार्बाक्सिन 75 प्रतिशत चूर्ण जो बीटावेक्स, बीटावेक्स पावर के नाम से प्रचलित है का 2 ग्राम या टेट्राकोनाजोल (रैक्सल) 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। बीज को मिट्टी के घड़े में भर कर थोड़ा भाग खाली रखें। बताये गये दवा में थोड़ा पानी मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को घड़े में डाल कर अच्छी तरह से मिला लें ताकि दवा की परत बीज पर अच्छी तरह से चढ़ जाए। इसे छाया में 6-8 घंटा सुखा कर ही बुआई करें।

चना, मटर, मसूर - बीजों को बुआई से पूर्व कवकनाशी जैसे बेविस्टीन से 2 ग्राम प्रति कि० ग्रा० 300 अथवा थीरम 3 ग्राम प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से उपचारित कर लें। 24 घंटा बाद कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 20 ई सी से 5 मिलीलीटर प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से उपचारित कर लें। कवक एवम् कीटनाशी रसायन से उपचारित बीज का 6-8 घंटा तक छाया में सुखाने के बाद जैविक फफूँदनाशी ट्राइकोडरमा 5 ग्राम एवम् स्यूडोमोनस 10 ग्राम से उपचारित कर लें। कुछ घंटों के उपरांत पीएसबी एवम् राईजोबियम(जीवाणु खाद) कल्चर से उपचारित कर ही खेतों में बुआई करें। आधा लीटर पानी में 100 ग्राम गुड़ को 15 मिनट तक गर्म कर ढंडा होने दें। 200 ग्राम राईजोबियम पैकेट को छिड़े घोल में मिला दें। तैयार मात्रा आधा एकड़ में बुआई हेतु बीज के लिए उपयुक्त है।

सरसों, तोरी, राई, तीसी - बेविस्टीन 2 ग्राम या थीरम या कैप्टान के 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर सुखाने के पश्चात् बीज की बुआई करें।

आलू - इण्डोफिल एम 45, डायथेन एम 45 (मैकोजेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण) या रिडोमिल एम जेड 2-3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर आवश्यक मात्रा में आलू बीज को घोल में 30 मिनट तक डुबोये रखने के उपरांत ही निकाल कर छाया में सुखाकर लगायें। बचे गये धोल को खेतों में छिड़क दें।

कीट से बचाव - दीमक, कटुआ एवम् कजरा पिल्लू जैसे कीटों से बचाव के लिए क्लोरपायरीफास 20 प्रतिशत तरल कीटनाशी जो बाजार में डर्बाबन, रडार इत्यादि नामों से मिलता है का 5 मिलीली प्रति लीटर पानी से उपचारित करें।

गेहूँ - नवम्बर माह के प्रथम सप्ताह तक - इन्व माह गेहूँ की बुआई, कल्ले निकलने एवम् मूकूट जड़ बनने की अवस्था में है। दोनों ही अवस्था में सिंचाई के बाद मिट्टी मुरमुरी कर घास पत निकालने के बाद नाइट्रोजन की एक चौथाई, 10-12.5 किलोग्राम (22-27 किलोग्राम यूरिया) प्रति एकड़ के हिसाब से उपरिपेक्षण करें।

दिसम्बर माह के द्वितीय सप्ताह तक बुआई के लिये उन्नत किस्म के 9107 एवम् एच यू डब्लू 234, 468, इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर ही व्यवहार में लें। 20 सेंटीमीटर की दूरी पर टोस कतार पर बुआई करें। उर्वरक हेतु 60: 25: 15 किलोग्राम एन : पी:ओ₂ के ३:०:० प्रति एकड़ की दर से आवश्यकता होती है। एक तिहाई, 45 किलोग्राम यूरिया + पूरी फास्फोरस एवम् पोटाश की मात्रा बुआई के वक्त डालें। दीमक से बचाव के लिये खेतों की तैयारी वक्त 10 किलोग्राम क्लोरपायरीफास 1.5 प्रतिशत घूल को अच्छी तरह से मिला लें। **गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु** (सिर्फ क्राउन जड़ बनने की अवस्था में ही) : 20-25 दिनों पर) आइसोप्रोटूरॉन 75 प्रतिशत घूल 600 ग्राम एवम् 2 4 डी 300 ग्राम या सल्फोसलफूरम 75 प्रतिशत डब्लू पी 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से बुआई के 25-30 दिनों के अंदर 300-400 लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। **गेहूँ के शाकीय अवस्था (कल्ले) में मौसम ठंड एवम् कुछ देर तक कुहासा रहने से पौधों के पत्ती झुलस रहें तो बचाव हेतु इण्डोफिल एम 45 का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।**

अवस्थापिधे अभी फूल एवम् फली आने की अवस्था में है एवम् मौसम साफ के साथ-साथ दिन और रात के वातावरण के तापमान में ज्यादा अंतर होने से कीटों का प्रकोप होने की काफी सम्भावना है। अतः बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत का 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। बोरेक्स 4 कि०/एकड़ के दर से मिट्टी में पौधे के समीप डालें या 1-1.5 पी पी एम बोरेक्स पत्तियों पर छिड़काव करें। कीटों से बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत का 1.5 मिलीलीटर या मोनोकोटोफॉस 1 मिलीलीटर या इन्डोक्साफेनॉल 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। प्रोफेनोफॉस 50 ई सी, मेथेमील 40 एस पी मोनोकोटोफॉस 36 एस एल लारवा को मार देता है पर पत्तों से जालीनुमा आवरण कीटनाशी के सम्यक में नहीं आ पाता है। अतः गैस बनने वाली दवा जैसे डीडीपीपी 0.5 मिलीली प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव करने से जालीनुमा आवरण से कीट बाहर निकल कीटनाशी के सम्यक में आकर प्रभावित हो जायेगा। माईस एवम् लाठी के लिए डायथेन 20 इन्सी 2 मिलीली और अकारिसाईड जैसे डाकोफॉल 18.5 इन्सी 2.5 मिलीली; क्लिस्टर बीटल हेतु साईप्रथिनेन 10 इन्सी 1 मिलीली प्रति ली० पानी या लेखा साइलाथिनेन 5 इन्सी 1 मिलीली प्रति ली० पानी; स्ट्रेरीलिटी मोजाईक के लिए डाकोफॉल 18.5 इन्सी 2.5 मिलीली या ऑक्सीडेमेटोन मिथाईल 25 इन्सी का 2 मिलीली या डायमेथोएट 30 इन्सी 2 मिलीली प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव एक पवित्र छोड़ कर 10 दिनों के अंतराल पर करें।

तीसी : पौधे अभी शाखा बनने एवम् वृद्धि हाने की अवस्था में है। 35(शाखा बनने एवम् वृद्धि) दिन होने पर सिंचाई हेतु प्रबंध करें। 20-45 दिन तक फसलों की प्रतियोगिता खरपतवारों से बनी रहती है। अतः नियंत्रण हेतु आइसोप्रोटूरॉन 75 डब्लू पी 400 ग्राम के साथ-साथ 2,4-डी (सोडियम नमक) 200 ग्राम बुआई के 30-35 दिनों में तैयार घोल का छिड़काव करें। अंतर्गत के बाद हाथों के द्वारा निकाल कर लें। अभी के मौसम में अंगमारी एवम् चूर्णिल फफूँद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु आइसोप्रोटूरॉन 75 प्रतिशत डब्लू पी 400 कार्बाजोफॉस 25 प्रतिशत डब्लू पी जिसका बाजार नाम डबल डोज के नाम से उपलब्ध है का 2 ग्राम प्रति ली० में तैयार घोल का छिड़काव शाम के वक्त सप्ताहिक अंतराल पर दो बार करें। चूर्णिल फफूँद बीमारी से बचाव हेतु ट्राईडेमॉर्फ 80 प्रतिशत ई सी (कैल्किसीन) का 5 मिलीली प्रति 10 ली० पानी या कैराथेन 1 मिलीली प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें।

संक्षिप्त:-

मौसम की अनुकूलता के कारण बैंगन तथा मिण्ड्री में घड़ एवम् फली छेदक, पत्ती झुलसा एवम् पत्ती मुड़ण टमाटर एवम् मिर्च में और लाल मकड़ी लत्तार वाले बरसाती सब्जियों में होने की प्रबल सम्भावना है। पत्ती झुलसा टमाटर एवम् मिर्च में रिडोमिल एम जेड 1.5 मिलीलीटर तथा पत्ती मुड़ण में सुपार डी या न्युराल डी का 0.5 मिलीलीटर, लाल मकड़ी के प्रकोप से बचने के लिए डायकोफाल या ओमाइट या इथियान 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। सभी लत्तार वाली सब्जी, बैंगन, फूलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है। अतः बचाव हेतु जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 1 मिलीलीटर प्रति 5 लीटर पानी या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

टमाटर में अंगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों में 3 ग्राम इण्डोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों में 3 ग्राम क्लॉडॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

टमाटर - स्प्रॉल लाइमा, अर्का आमा, अगात पत्तागोभी - प्राईड ऑफ इन्डिया, गोल्डन एवम्, अर्ली ड्रम हेड, फूलगोभी - पूसा बैंगन, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा शुभ्रा एवम् बैंगन - स्वर्ण प्रतिभा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण मणी । प्याज का बीजड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म - एन 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एपीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा काइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बर्नई सलेक्सन, पटना काइट, बेलारी रेड इत्यादि का ही चयन करें।

4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुड़ाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी मुरमुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फूहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेमिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

प्याज का बीजड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म - एन 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एपीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा काइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बर्नई सलेक्सन, पटना काइट, बेलारी रेड इत्यादि का ही चयन करें। 4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतु 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुड़ाई का कार्य करने में आसानी हो। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी मुरमुरी गोबर की खाद से दबा कर ढक दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फूहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेमिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

सभी लत्तार वाली सब्जी, बैंगन, फूलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है। अतः बचाव हेतु जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1 ग्राम प्रति लीटर पानी या आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 1 या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में अंगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों में 3 ग्राम इण्डोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों में 3 ग्राम क्लॉडॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

फलदार पौधों को लगाने का अनुकूल मौसम है। इस क्षेत्र के फलों के निम्नलिखित किस्मों को लें:-

शरीराना - अर्का साहन कैला - बैंगला, रोबेरा, जी-9 **पपीता** - पूसा लेडीसीसय, पूसा डवारफ, कुर्ग हनि ड्यू, पूसा नन्दा एवम् अमरुद -अलाहाबाद सफेदा, लखनऊ 49, अर्का मृदुला, ललीत, अर्का अमृत्यु **संक्षिप्त** : सभी लत्तार वाली सब्जी, बैंगन, फूलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में निरावट होने से कीटों का प्रकोप बढ़ गया है। अतः जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1 ग्राम प्रति लीटर पानी या इन्डोसलफूरम 4 प्रतिशत घूल 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 1 ग्राम या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में झुलसा एवम् म्लानी रोग से ग्रसित खेतों में बीम रसायन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। मावी मौसम को देखते हुये चूड़ों पर मोनोकोटोफास 1 मिलीलीटर या मिथाइल डिमेटोन। मिलीलीटर या इमिडाक्लोप्रिड 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

पसुरी के लिए सुझाव - मवेशियों को रात में ढंड से बचाव हेतु घर में रखें। फर्श को प्रत्येक दिन सूखा रखें। खुर पका-मूँठ पका, हेमोरेजिक सेप्टिसेमिया, ब्लेक क्वॉटर एवम् एन्टरोक्सिमिया बीमारी से बचाव हेतु इड महिने में टीकाकरण करें। धनेल बीमारी से बचाव हेतु विशेष ध्यान दें। बाह्य परजीवी से बचाव के लिए शरीर पर दवा का प्रयोग करें। जरूरत के हिसाब से लवण एवम् मिनरल मिक्सचर को मुख्य भोजन में मिला कर दें। ढंड में चारा के आभाव से बचने के लिए चारा का मंडारण करें। चारा फसल हेतु बरसीम को मध्य माह तक एवम् जी की उन्नत किस्म जैसे - निरसा ओट 6 एवम् 9, जे एच ओ 822 एवम् 851 इड माह के अंत तक बुआई समाप्त कर लें। इड माह बकरियों एवम् मेंडों को प्रत्येक तिसरे लाल पी पी आर से बचाव हेतु टीकाकरण करें। बाह्यपरजीवी से बचाव हेतु भेड़ों को कतरनी के 21 दिनों के बाद सङ्काम से बचाव के लिए निस्सकामक दवा का घोल से नहलाएँ।

ग्रहण(चूना) गुणियालन - यदि चूजे झूट के नीचे बल्ब के नानदिक एक साथ हो जाये तो समझना चाहिए की झूट में ताम्राम कण है। ताम्राम बढ़ाने के लिए अतिरिक्त बल्ब का इन्तजाम करें या जो बल्ब झूट में लगा है, उसको थोड़ा नीचे कर दें। यदि चूजे बल्ब से काफी दूर किनारे में जाकर जमा हो तो समझना चाहिये कि झूट में ताम्राम ज्यादा है। ऐसी स्थिति में ताम्राम कम करें। इसके लिए बल्ब को ऊपर खींचें या बल्ब की संख्या या पावर को कम करें। अतः चूजों पर नजर रखें, समझकर ताम्राम नियंत्रित करें।

मछली पालन : वातावरण के तापमान में कमी के साथ-साथ पानी के तापमान में भी कमी होने के कारण तालाब में अधिक संख्या में मछली होने के चलते बहुत ही अधिक घातक एवम् संक्रामक बीमारी लाल धब्बा(ई०यू०एस०) होने की सम्भावना अधिक होने के साथ ही साथ देखे भी जा रहे हैं। अतः बचाव हेतु 1 लीटर एक्वामीन 10 एक्स 100 लीटर पानी में घोल बनाकर तालाब के सभी स्थान पर सामान मात्रा में छिड़काव करें। इसके छिड़काव से पानी की कठोरता में बढ़त के साथ-साथ मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा में बढ़त हो जाती है। जिसके चलते मछली उत्तपादन बढ़ जाता है।